मार्च 2017

दादावाणी

कीमत ₹ 10

सिन्सियरिटी क्या है? जिसके प्रति सिन्सियर रहते हैं, उसके लिए गलत शब्द नहीं निकलते और यदि निकल जाएँ तो पछतावा कर लेता है और उसके प्रति बुरा बर्ताव नहीं करता।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 12 अंक : 5
अखंड क्रमांक : 137
मार्च 2017

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

सिन्सियरिटी : इन्सिन्सियरिटी

संपादकीय

किसी भी कार्य को सिद्ध करने के लिए कौन सी चीज़ अनिवार्य है? फिर चाहे वह कार्य व्यवसायिक हो या सामाजिक हो, धार्मिक हो या फिर भगवान की प्राप्ति के लिए हो या अंत में एकावतारी बनकर मोक्ष में जाने के लिए हो। सिर्फ दो ही गुणों की, सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी की ज़रूरत है। दादा श्री कहते हैं, 'इस काल में अगर सिर्फ ये दो ही चीज़ें होंगी तो बहुत हो गया! अरे, एक होगी तो भी ठेठ मोक्ष में ले जाएगी!'

सिन्सियरिटी क्या है? खुद अपने आप प्रति सिन्सियर, खुद के द्वारा निश्चित की गई चीज़ों में सिन्सियर। किसी भी संयोग में कभी भी अपने ध्येय के विरुद्ध न चले। दादा श्री कहते हैं, 'जिसे सिन्सियर रहना है, उसे कच्चे कान का नहीं होना चाहिए।'

सिन्सियर व्यक्ति विवेक वाला होता है। अंदर मन उल्टा बताए और अगर वह अपने ध्येय के अनुकूल न हो तो तुरंत छोड़ देना चाहिए। अपने ध्येय के अनुकूल होना चाहिए और यदि ध्येय के अनुकूल हो तो मन का चला लेना। 'निश्चय उसे कहते हैं जिसमें सिन्सियरिटी हो।'

'जो व्यक्ति दूसरों के प्रति सिन्सियर नहीं रहता, वह खुद अपने प्रति सिन्सियर नहीं रह सकता।' मतभेद होते ही सिन्सियरिटी टूट जाती है। सिन्सियरिटी उसे कहते हैं, जिसमें किसी भी परिस्थिति में किसी के लिए खराब विचार उत्पन्न ही न हों। सामने वाला चाहे जितने भी नियम तोड़े लेकिन सिन्सियरिटी न जाए, व्यवहार में ही नहीं लेकिन आँखों में से भी सिन्सियरिटी न जाए, वहाँ प्रेम खोजना। सिन्सियरिटी वाला यदि डाँटे तब भी सामने वाला जमा-उधार (राग-द्वेष) नहीं करता और हिसाब भी नहीं रखता बल्कि प्रेम रहता है।

सिन्सियरिटी यानी हार्टिली। जो हार्टिली (हार्दिक) सिन्सियरिटी या इन्सिन्सियरिटी में यदि मन एकाकार हो जाए तो उस पर से कहा जा सकता है कि उसकी गति अच्छी होगी या खराब।

इन्सिन्सियरिटी भी अच्छा गुण है। वह जल्दी मोक्ष में ले जाता है। लेकिन इन्सिन्सियर होना सरल नहीं है। ये न तो इन्सिन्सियर रहते हैं और न ही सिन्सियर। अर्धदग्ध रहते हैं। दादा श्री कहते हैं कि अगर आधी सिन्सियरिटी व मॉरैलिटी रहेगी तो भी चलेगा। इस काल में पचास प्रतिशत होगी तो भी बहुत हो गया। सौ प्रतिशत होने पर तो भगवान बन जाएँगे।

प्रस्तुत संकलन में, दादा श्री की वाणी में सिन्सियरिटी व इन्सिन्सियरिटी पर अद्भुत विश्लेषण हुआ है, जो वाचक को आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति करने में विशेष समझ प्रदान करेगी।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

सिन्सियरिटी : इन्सिन्सियरिटी

तो होती है, नैतिक मूल्यों की स्थापना

प्रश्नकर्ता : समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : हाँ। मैं आत्मा की बात तो करता हूँ लेकिन साथ-साथ समाज के नैतिक मूल्य भी रखता हूँ। समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना भी करता हूँ ताकि आप पहले नैतिक मूल्यवान बन जाओ। पहले आपके भीतर नैतिक स्थापना हो जाए तो फिर दूसरों में भी हो जाएगी लेकिन पहले आपके भीतर पूरी तरह से नैतिक स्थापना हो जानी चाहिए। संपूर्ण ईमानदारी और सिन्सियरिटी और साथ में मॉरैलिटी चाहिए। बस, आप ऐसे बन जाओ, ताकि फिर इस समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना कर सको, और कुछ नहीं करना है।

ज़रूरत है मात्र दो गुणों की

प्रश्नकर्ता : सत्य के प्रति गति करने के लिए क्या कोई ऐसा सद्गुण है जो अनिवार्य माना जाता है, और उस सद्गुण से क्रमश: प्रगति होती है?

दादाश्री : सत्य के प्रति गति करने के लिए यदि सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी, ये दो गुण होंगे तो वे आपको मोक्ष में ले जाएँगे। इन दोनों को यदि आहत नहीं होने दोगे तो मोक्ष में जा सकोगे।

कौन-सी चीज़ अच्छी है संसार में? ईमानदारी। हाँ, यानी मॉरल और सिन्सियर! अगर ये दो गुण रहे न तो किसी भी सत्य की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस काल में क्या यह 'पॉसिबल' है?

दादाश्री : पॉसिबल नहीं है लेकिन आपके मन में से श्रद्धा तो नहीं जानी चाहिए न! श्रद्धा तो यही होनी चाहिए न कि 'यही होना चाहिए।' यह नहीं हो पाए तो, इट इज़ डिफरेन्ट मेटर (वह अलग चीज़ है)। लेकिन आपकी श्रद्धा में तो यह रहना ही चाहिए कि 'ऐसा ही होना चाहिए।' वर्तन में भले ही न हो लेकिन श्रद्धा में तो रहना ही चाहिए। फिर यदि वर्तन के आधार पर श्रद्धा को हटा दोगे तो बस! आप खत्म हो जाओगे, स्लिप हो जाओगे। बाकी, यही श्रद्धा मज़बूत करनी चाहिए कि 'मॉरल और सिन्सियर तो रहना ही चाहिए, एट एनी टाइम!' मोक्ष में जाने के लिए शास्त्र के अन्य कोई शब्द नहीं होंगे तो चलेगा लेकिन मॉरल और सिन्सियर ये दोनों होने चाहिए। बाकी, शास्त्रों में तो अनंत शब्द हैं।

ये तो ठेठ मोक्ष में ले जाते हैं

सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी का अर्थ इस हद तक का है कि ये ठेठ मोक्ष में ले जाते हैं। मानवधर्म में जितनी सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी होगी खुद उतना ही मानवधर्म ला सकेगा। उससे

आगे की सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी वहाँ तक है कि ठेठ मोक्ष में ले जाए।

'सिन्सियरिटी' और 'मॉरैलिटी' भगवान के पास जाने की मेन रोड (मुख्य रास्ता) है, बाकी सब 'बाय वे' हैं।

सिर्फ सिन्सियरिटी से ही मोक्ष में जा सकते हैं; सिर्फ मॉरैलिटी से ही मोक्ष में जा सकते हैं। ऐसा है कि प्रत्येक, एक-एक गुण से मोक्ष में जा सकते हैं लेकिन उसे विकसित करना आना चाहिए न! उन गुणों का विकास करना आना चाहिए न! वे गुण क्या हैं? उनकी परिभाषा जाननी पड़ेगी न!

प्रश्नकर्ता : सिन्सियरिटी गुण कैसा है?

दादाश्री : सिन्सियरिटी अर्थात् वह मूल आत्मा के नज़दीक की बाउन्ड्री का ही गुण है। सिन्सियर अर्थात् जो खुद के प्रति भी सिन्सियर रहे और औरों के प्रति भी। ऐसा नहीं है कि यह माल पराया है। ऐसा नहीं कि 'यह मेरा साहब है इसलिए सिन्सियर रहता हूँ और इनके प्रति नहीं रहूँगा।' स्वभाव से ही सिन्सियर होता है।

समझ लो इतना छोटा सा अर्थ

प्रश्नकर्ता : 'सिन्सियरिटी' और 'मॉरैलिटी' का 'एक्ज़ेक्ट' (यथार्थ) अर्थ समझाइए।

दादाश्री : सिन्सियरिटी क्या है? इन्सिन्सियर जगह पर सिन्सियर रहना। आसपास का वातावरण इन्सिन्सियर हो फिर भी सिन्सियर रहना, वह सिन्सियर कहलाता है। सिन्सियर और मॉरल रहने से मोक्ष है।

'मॉरैलिटी' का अर्थ क्या है? खुद के हक का और जो सहज रूप से मिल जाए, वह सभी भोगने की छूट है। यह 'मॉरैलिटी' का सब से अंतिम अर्थ है। 'मॉरैलिटी' तो बहुत गूढ़ है, उस पर तो शास्त्र के शास्त्र लिखे जा सकते हैं। लेकिन इस अंतिम अर्थ पर से आप समझ जाओ।

आपको दिव्यचक्षु प्रदान किए हैं इसलिए यह अंतिम बाउन्ड्री का अर्थ आप समझ सकते हो कि क्या योग्य होना चाहिए?

'सिन्सियरिटी' तो जो व्यक्ति दूसरों के प्रति 'सिन्सियर' नहीं रहता, वह खुद अपने प्रति भी 'सिन्सियर' नहीं रह सकता। किसी के प्रति थोड़ा भी 'इन्सिन्सियर' नहीं होना चाहिए। उससे खुद की 'सिन्सियरिटी' टूटती है।

सिन्सियरिटी का अर्थ तो जो खुद अपने प्रति सिन्सियर नहीं रहा, किसी के प्रति सिन्सियर नहीं रहा' उसे खुद अपने आप के प्रति सिन्सियरिटी नहीं रहती और जो किसी के प्रति इन्सिन्सियर है, वह खुद अपने आप के प्रति ही इन्सिन्सियर हो जाता है। इतना छोटा सा ही अर्थ समझना है।

'सिन्सियरिटी' और 'मॉरैलिटी' इस काल में यदि ये दो चीज़ें हों तो बहुत हो गया। अरे! अगर एक होगा, फिर भी वह ठेठ मोक्ष तक ले जाएगा। परंतु उसे पकड़ लेना चाहिए, और जब-जब अड़चन आए, तब 'ज्ञानीपुरुष' के पास आकर खुलासा कर जाना चाहिए कि यह 'मॉरैलिटी' है या यह नहीं।

सिन्सियरिटी की सरल समझ

प्रश्नकर्ता : सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी के बारे में थोड़ा ज़्यादा स्पष्टीकरण दीजिए।

दादाश्री : मान लो यहाँ पर जानवर घूम रहे हों,' मोर या कोई और जानवर घूम रहे हों, और हम वहाँ पर जाएँ तो वे उड़ न जाएँ, उनके साथ इस प्रकार से सिन्सियर रहें, तब सिन्सियर कहा जाएगा। उसके मन में ऐसा लगना चाहिए कि यह मुझे दुःख नहीं देगा। जब प्रत्येक जीव

के मन में अपने प्रति ऐसा रहेगा तब कहा जाएगा कि सिन्सियर।

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है लेकिन सिन्सियरिटी को ज़रा विस्तार से समझना है।

दादाश्री : जो खुद अपने प्रति सिन्सियर रहे वह सभी के प्रति सिन्सियर रह सकता है।

सिन्सियर, नहीं चूकता ध्येय कभी भी

प्रश्नकर्ता : खुद अपने आप के प्रति सिन्सियर रहना किसे कहते हैं?

दादाश्री : जो किन्हीं भी संयोगों में कभी भी अपने ध्येय के विरुद्ध न चले। लाभदायक हो वहाँ पर ध्येय बदलकर करे या तो नुकसान हो तब ध्येय बदलकर करे, ऐसा नहीं होना चाहिए। जो अपना तय किया हुआ ध्येय नहीं चूकता वह खुद अपने आप के प्रति सिन्सियर है! खुद अपने आप के प्रति सिन्सियर रहना यानी खुद अपने आप के प्रति संपूर्ण सिन्सियर, खुद की जो भावना है उस भावना के अनुसार सिन्सियर रहना।

फिर भी चूक जाते हैं सिन्सियरिटी

प्रश्नकर्ता : अब यह ध्येय की बात की, तो रिलेटिव में तो सामान्य लोगों के अनेक ध्येय होते हैं और ध्येय बदलते भी रहते हैं। तो आप जिस ध्येय की बात कर रहे हैं, वह खास तौर पर किस खास ध्येय की बात कर रहे हैं?

दादाश्री : खुद अपने आप के प्रति सिन्सियर रहना। अपने द्वारा पक्की की गई बातों के प्रति सिन्सियर रहना चाहिए कि 'मेरे माँ-बाप की सेवा करनी है।' फिर उसमें अन्य कुछ नहीं। लेकिन फिर भी बाद में वहाँ क्या परेशानी आती है कि शादी के बाद जब 'गुरु' (पत्नी) आती है न, फिर वह 'गुरु' कहती है, 'मम्मी का स्वभाव बहुत विचित्र है।' फिर भी वह नहीं मानता। माँ का भक्त है न, सिन्सियर है न! इसलिए नहीं मानता। 'मेरी मम्मी ऐसी नहीं है, आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए' कहता है। वह जानती है कि अभी टाइट है। इसलिए कुछ समय बाद वह धीरे से कला करती है और फिर धीरे-धीरे उसके मन में घुसा देती है। तब फिर वह खुद ही कहने लगता है कि 'मम्मी का स्वभाव पक्षपाती है।' देखो यहाँ सिन्सियरिटी चूक गया न! सिन्सियर रहने वाले को कच्चे कान का नहीं होना चाहिए।

हम कभी भी कच्चे कान वाले नहीं बने। आप कुछ कह जाओ फिर भी हम सही नहीं मानते। उसका देख लेते हैं, जाँच कर लेते हैं। लेकिन हमारा नियम एक तरफा मान लेने का नहीं है। हीरा बा मुझ से कहते कि, 'बा ने ऐसा किया था' तो ऐसे मान नहीं लेते थे। इसमें न्याय हो सकता है, शायद झवेर बा ने हीरा बा को दुःख दिया भी हो, तब भी हम सिन्सियर ही रहे। यानी हम सिन्सियर ही रहेंगे।

पूर्णतः अभिमुख ध्येय के प्रति ही

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा हुआ कि किसी ने एक ही ध्येय पक्का किया, उसे खुद को जो सही लगा और जो ध्येय पक्का किया, उसी ध्येय को पकड़े रखना चाहिए?

दादाश्री : वह ध्येय कैसा होना चाहिए? ऐसा होना चाहिए जिसे सौ लोग 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) करें। माँ-बाप की सेवा करने में बहुत से लोग सहमत होंगे या मना करेंगे?

प्रश्नकर्ता : सभी सहमत होंगे।

दादाश्री : ऐसे ध्येय होने चाहिए। ऐसा ध्येय पक्का किया कि 'पत्नी को रोज़ मारना है' तो यह क्या कोई ध्येय है?

प्रश्नकर्ता : कोई अगर ऐसा ध्येय लेकर बैठ जाए कि माँ-बाप की सेवा ही नहीं करनी है।

दादाश्री : इस ध्येय को पकड़े रहे न, तो भी अच्छा है लेकिन अगर ऐसा ध्येय तय करने के बाद फिर सेवा करे तो गुनाह है। किसी भी ध्येय को पकड़े रखो न, तो अच्छा है लेकिन दुलमुल, खिचड़ी बना दोगे तो फिर खीर में नमक डालकर कढ़ी बना दोगे तो ज़हर बन जाएगा न!

सिन्सियर का वर्तन होता है विवेकपूर्ण

प्रश्नकर्ता : सब जो ऐसा कहते हैं कि 'अंत:करण में से आवाज़ आ रही है,' तो अंदर उनको खुद को लगे कि यह ठीक है और वे उस अनुसार आचरण करें तो वे सिन्सियर कहलाएँगे?

दादाश्री : नहीं, अंत:करण में तो कुछ भी हो सकता है। अंत:करण में से तो ऐसा विचार भी आ सकता है कि 'कल से हमें अलग रहना है।' अब माँ-बाप को बेचारों को बुढ़ापा आया और अंत:करण में से अलग रहने का विचार आए तो क्या हमें अलग रहने जाना चाहिए? नहीं। वहाँ विवेक है। विवेक वाला सिन्सियर होता है। हाँ, बेचारे बूढ़े लोग! क्या खाएँगे फिर? अंदर की आवाज़ को सुनना ही नहीं है।

लोग कहते हैं न, 'मेरे आत्मा की आवाज़ आई।' अरे! कहीं आत्मा की आवाज़ होती है? उस पर विवेक रखो। उसमें हर्ज नहीं है। यदि तेरे ध्येय को अनुकूल है तो तू उसी अनुसार चलना। अनुकूल न हो तो दूसरी तरह से चलना।

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा भी होता है कि खुद को जो अनुकूल आए, उसी को ऐसा मान लेते हैं कि 'हाँ, ठीक है,' वह गलत हो, फिर भी सही मान लेते हैं।

दादाश्री : सही लगने का अर्थ ऐसा नहीं है लेकिन सद्विवेक क्या है? भीतर से मन तो बताएगा, भीतर अंदर की आवाज़ तो बताएगी कि 'ऐसा करो।' लेकिन अपने ध्येय के अनुकूल न हो तो छोड़ देना चाहिए। अपने ध्येय के अनुकूल होना चाहिए। अगर ध्येय के अनुकूल हो तो अंदर की आवाज़ मानना।

कुदरत हमेशा सिन्सियर की मदद करती है

प्रश्नकर्ता : शुभ रास्ते पर जाने के विचार आते हैं लेकिन वे टिकते नहीं हैं और फिर अशुभ विचार आते हैं, वे क्या हैं?

दादाश्री : विचार क्या हैं? आगे जाना हो, तो भी विचार काम करते हैं और पीछे जाना हो तो भी विचार काम करते हैं। खुदा की तरफ जाने के रास्ते पर आगे जाते हो और वापस मुड़ते हो, उसके जैसा होता है। एक मील आगे जाओ और एक मील पीछे जाओ, एक मील आगे जाओ और वापस मुड़ो...! एक ही तरह के विचार रखना अच्छा है। पीछे जाना है मतलब पीछे जाना और आगे जाना है मतलब आगे जाना। आगे जाना हो उसे भी कुदरत 'हेल्प' करती है और पीछे जाना हो उसे भी कुदरत 'हेल्प' करती है। 'नेचर' क्या कहता है? 'आई विल हेल्प यू'। तुझे जो काम करना हो, चोरी करनी हो तो 'आई विल हेल्प यू'। कुदरत की तो बहुत बड़ी 'हेल्प' है। कुदरत की 'हेल्प' से तो यह सब चल रहा है! लेकिन तू निश्चित नहीं करता कि मुझे क्या करना है? यदि तू निश्चित करे तो कुदरत तुझे 'हेल्प' करने के लिए तैयार ही है। 'फर्स्ट डिसाइड' कि मुझे इतना करना है, फिर उसे निश्चयपूर्वक सुबह में पहले याद करना चाहिए। आपके निश्चय के प्रति आपको 'सिन्सियर' रहना चाहिए तो कुदरत आपके पक्ष में 'हेल्प' करेगी। इसलिए बात को समझो।

उसका उपाय सिन्सियरिटी

प्रश्नकर्ता : किसी व्यक्ति को कोई पक्का ध्येय सिद्ध करना है लेकिन वह जानता है कि उसकी वैसी क्षमता नहीं है तो उस व्यक्ति को क्या करना चाहिए?

दादाश्री : बार-बार प्रयत्न करने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : बहुत बार प्रयत्न करने के बावजूद भी एक स्टेज पर पहुँचने के बाद, वहाँ से वापस गिर जाए, तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : प्रयत्न सिन्सियर होने चाहिए। जिसकी खुद की अपनी श्रद्धा न डिगे तो उसके सभी काम होते हैं।

सिन्सियरिटी टू मॉरैलिटी, 'बी सिन्सियर एन्ड बी मॉरल', वही सब का उपाय है।

प्रश्नकर्ता : निश्चय के साथ-साथ सिन्सियरिटी की ज़रूरत है न?

दादाश्री : सिन्सियरिटी तो है ही। निश्चय होगा तब सिन्सियरिटी रहेगी ही। निश्चय उसे कहते हैं कि जहाँ सिन्सियरिटी हो। तभी उसे निश्चय कहेंगे। निश्चय करने के बाद भी नहीं हो पाए तो वह सिन्सियरिटी नहीं है। क्या-क्या है, वह हम जानते हैं। निश्चय सिद्ध होता है तो वहाँ सिन्सियरिटी है ही। ऐसा सब है। जहाँ निश्चय है क्या वहाँ इन्सिन्सियर रह सकते हैं?

स्ट्रोंग निश्चय से होता है फलीभूत

प्रश्नकर्ता : संकल्प नहीं टिकता अर्थात् मन जो भी निश्चय करता है, उसे पकड़कर नहीं रख सकते।

दादाश्री : मन निश्चय करता ही नहीं है। वह तो पैम्फलेट ही दिखाता रहता है। बुद्धि निश्चय करती है। बुद्धि की तरफ से कमी है। मन तो पैम्फलेट दिखाएगा कि, 'यहाँ से ऐसे चलकर जाएँगे, टैक्सी कर लेंगे।' सब बताता है, जितना हो उतना। लेकिन बुद्धि का निश्चय होना चाहिए। क्या निश्चय नहीं हो पाता? जल्दी से डिसिज़न नहीं ले पाते?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : वह बुद्धि का दोष है, मन की तरफ से परेशानी नहीं है। जल्दी से डिसिज़न लेना हो तो नहीं ले पाते। आपको यहाँ ज्ञान देंगे न, उससे बुद्धि की शक्ति बढ़ जाएगी। फिर डिसिज़न ले पाओगे। और कोई परेशानी है?

प्रश्नकर्ता : मेरा प्रश्न ऐसा है कि हमारे सभी विचारों में से हमें किसी एक विचार को फलीभूत करना हो तो हमें क्या करना चाहिए।

दादाश्री : कौन-सा विचार फलीभूत करना है?

प्रश्नकर्ता : औधोगिक।

दादाश्री : हाँ, वह तो हमें तय करना चाहिए। हमें जैसा विचार आए वैसा निश्चय करना है कि 'अब यही करना है।' तो तुरंत फलीभूत हो जाएगा। आप उस विचार पर निश्चय करो। हाँ, स्ट्रोंग निश्चय। एक स्ट्रोंग डिसिज़न ले लो कि मुझे यही करना है, अब और कुछ नहीं तो वह सीधा हो जाएगा, उसे लाइन मिल जाएगी।

जिसे जो कामना हो, उसे वह मिल ही जाता है। आपका भी दृढ़ होगा, सिन्सियरिटी होगी, मॉरैलिटी होगी, तो हर एक चीज़ मिल जाएगी। सिन्सियरिटी व मॉरैलिटी से सभी चीज़ें आ जाती हैं। किसी चीज़ की कमी नहीं रहती।

यह अनंत काल का अज्ञान है, उसमें कुछ

और समय बीत जाए तो तब कैसी दशा होगी? अगर आप मेरे प्रति सिन्सियर रहोगे तो एक घंटे में मेरे जैसे बन जाओगे लेकिन इस काल में सिन्सियरिटी है नहीं न! सिन्सियरिटी कहाँ से लाएँगे? कितने प्रकार के व्यापार, कितनी आफत, कितनी फाइलें!

पकड़े रखना अपना सिद्धांत

प्रश्नकर्ता : कोई व्यक्ति बहुत सिन्सियर हो लेकिन सामने वाले व्यक्ति को उसकी सिन्सियरिटी का पता न चले, तो ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिए?

दादाश्री : जिसे पता न चले उसे नुकसान होगा। हम सिन्सियर रहेंगे तो उससे हमें फायदा होगा। तू तेरी सिन्सियरिटी नहीं छोड़ना। अगर वह तुझे कहे कि तू इन्सिन्सियर है, तो भी तू तेरी सिन्सियरिटी नहीं तोड़ना। वह तो चाहे कुछ भी कहे। सब से बड़ी बात तो यह है कि हम सिन्सियर रहे। यह ऐसी चीज़ है कि जो हमें ठेठ तक सुरक्षित पहुँचा देगी। फिर खतरा नहीं रहेगा।

कोई व्यक्ति हमेशा सिन्सियर रहता है लेकिन यदि दो-तीन दिन मतभेद हो जाएँ तो तुरंत उसकी सिन्सियरिटी बिगड़ जाती है। ऐसा नहीं होना चाहिए। चाहे मतभेद हो जाएँ, मारामारी हो जाए, तब भी सिन्सियरिटी नहीं बिगड़नी चाहिए। सामने वाले व्यक्ति ने गलती की, वह कमज़ोर पड़ गया तो क्या हमें हमारा सिद्धांत तोड़ देना चाहिए?

सिन्सियरिटी ही सब से बड़ी कमाई

यह तो सभी को इन्सिन्सियर देखकर खुद इन्सिन्सियर बनता गया। यह लोकसंज्ञा है न! सामने वाला व्यक्ति इन्सिन्सियर रहे, तब भी वह खुद सिन्सियर रहना नहीं छोड़े तो उसे सिन्सियरिटी कहते हैं। सामने वाला इन्सिन्सियर रहता है तो वह उसकी कमज़ोरी है लेकिन उसके साथ बैर रखने का कोई कारण नहीं है। बैर रखकर इन्सिन्सियर होने का कोई कारण नहीं है क्योंकि सिन्सियर रहना तो सब से बड़ी कमाई है। वह कमाई कौन खोए? इतनी बड़ी कमाई कौन बिगाड़े? सामने वाला इन्सिन्सियर हो सकता है लेकिन हम सिन्सियर हैं तो फिर हम हमारा खुद का क्यों बिगाड़ें?

प्रश्नकर्ता : यानी जो दूसरों के प्रति सिन्सियर रहता है, वह खुद अपने आप के प्रति सिन्सियर है, ऐसे कह सकते हैं न?

दादाश्री : हाँ, जो दूसरों के प्रति सिन्सियर रहता है, वह खुद अपने आप के प्रति सिन्सियर है ही। जो दूसरों के प्रति सिन्सियर नहीं, वह खुद अपने आप के प्रति सिन्सियर नहीं है। हमारा मुद्रालेख (स्टेम्प) है; सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी। मॉरेलिटी में कोई अंतर नहीं है, 'नो डिफरेन्स' हर एक बात में सिन्सियरिटी। जिस-जिस से मिले न, उन सभी के प्रति सिन्सियर। चाहे किसी से भी मिले, दुकान में माल लेने जाए तो वहाँ भी उसके प्रति सिन्सियर। हर कहीं! 'ऐनी व्हेर!'

इन्सिन्सियर के सामने भी सिन्सियर

यह पूरी, इतनी बड़ी दुनिया है न, इसमें अगर आप पच्चीस लोगों के प्रति ही सिन्सियर रहो न तो उसके जैसा और कोई पुण्य नहीं है।

प्रश्नकर्ता : किस तरह से सिन्सियर रह सकते हैं?

दादाश्री : आपका कोई एकाध मित्र है?

प्रश्नकर्ता : बहुत हैं।

दादाश्री : उनके प्रति, किसी के प्रति सिन्सियर हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : सिन्सियर किसे कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : जिस तरह अपने खुद के प्रति रहते हैं, उसी तरह उसके प्रति रहें, तो उसे सिन्सियर कहेंगे।

दादाश्री : हाँ, वह सिन्सियर कहलाएगा। अब यदि वह कहीं पर आपके बारे में उल्टा कहे और आपको सुनने में आए, तो आपको क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : कान सुने बिना नहीं रहेंगे।

दादाश्री : हाँ, लेकिन आपके अपने ही व्यक्ति ने कहा तो?

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है, जब तक आमने-सामने नहीं सुनता तब तक नहीं मानूँगा। शायद कोई विक्षेप डाल रहा हो।

दादाश्री : हाँ, वह ठीक है। अब यदि आपको खुद को कुछ उल्टा कह दे तो?

प्रश्नकर्ता : कभी अगर वे गुस्से में हो, तो उनकी इतने सालों की मित्रता को यों कुछ ही देर में नहीं तोड़ सकते।

दादाश्री : तो आप शांति रखोगे न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : और उनके प्रति खराब विचार नहीं आएँगे न?

प्रश्नकर्ता : नहीं आएँगे।

दादाश्री : तो वह सिन्सियरिटी कहलाएगी। किसी भी परिस्थिति में उनके प्रति खराब विचार न आएँ, तो वह सिन्सियरिटी है। वह भले ही इन्सिन्सियर हो जाए, फिर भी अगर आप सिन्सियरिटी नहीं छोड़ते, तो उसे सिन्सियरिटी कहेंगे। ऐसा यदि आपका पच्चीस लोगों के साथ रहा तो बहुत हो गया। बहुत बड़ा पुण्य, राजा का राज्य मिलने जैसा पुण्य कहा जाएगा! यह तप ऐसा वैसा नहीं है। यदि सामने वाले के लिए खराब विचार आएँ तो उसे निकाल देना चाहिए। तभी उसके प्रति सिन्सियरिटी रहेगी और वह भी सिन्सियरली रहेगा।

सिन्सियरिटी का अर्थ क्या है? जिसके प्रति सिन्सियर है, उसके लिए मन में खराब विचार न आए और यदि आ जाए तो पश्चाताप कर ले। उसके लिए कोई खराब शब्द न निकले और अगर निकल जाए तो पश्चाताप कर ले। उसके साथ खराब व्यवहार हो ही नहीं। सिन्सियरिटी उसे कहते हैं कि जिसमें मन-वचन-काया के योगों का व्यवहार उसके प्रति सिन्सियर ही रहे।

नहीं तोड़ना आपकी सिन्सियरिटी

प्रश्नकर्ता : सामने वाला चोर हो तो?

दादाश्री : सामने वाला चाहे कैसा भी हो, सामने वाले से टकरा जाए लेकिन टकराव में खुद का भाव न छोड़े अपने आप पर विश्वास, संपूर्ण विश्वास! अन्य कुछ करने की भावना ही नहीं। जो होगा वह एक्सेप्ट! वर्ना च्युत हो जाएगा। हो, होकर क्या हो जाएगा इस दुनिया में? बहुत हुआ तो वे लिटाकर अर्थी में ले जाते वही न? वह तो बहुत बड़ा इनाम है! आराम से ले जाते हैं, वही न! वे और क्या वह इनाम देंगे?

प्रश्नकर्ता : इस दुनिया में अगर कोई ऐसा करे, तब तो लोग खा जाएँगे।

दादाश्री : किसी में खा जाने की शक्ति है ही नहीं न! खा जाने की शक्ति तो ये कुत्ते, शेर इन सभी में है लेकिन उन्हें तो इन लोगों ने बाँध

दिया है। बाकी इन बेचारों में तो शक्ति है ही कहाँ? खा जाने की शक्ति किसी में भी कहाँ से होगी? क्योंकि कुदरत के न्याय से बाहर कोई चीज़ नहीं है और कुदरत में अन्याय करने की किसी में शक्ति नहीं है। अन्याय करने की किसी में शक्ति नहीं है और कुदरत न्याय से बाहर नहीं है।

जो सिन्सियर है वह सुखी तो रहता है या नहीं? यह दुःख इन्सिन्सियरिटी की वजह से है। जब तक किसी के प्रति भी इन्सिन्सियर रहोगे, तब तक दुःख ही आएगा। किसी के भी प्रति, एक ही व्यक्ति के प्रति सिन्सियर हो जाओ।

सिन्सियरिटी है पार उतरने की चाबी

प्रश्नकर्ता : आपका एक वाक्य ऐसा है कि 'आप गुप्त रूप से काम कर रहे होंगे और किसी को पता न चले, किसी को भी खबर न हो, तो भी जगत् को उसकी प्रतिध्वनि आए बिना नहीं रहेगी। ऐसा नियम है सिन्सियरिटी का।'

दादाश्री : हाँ, ऐसा नियम है।

प्रश्नकर्ता : उसे खुद को गाने की ज़रूरत नहीं कि 'मैं ऐसा हूँ और वैसा हूँ।'

दादाश्री : कुछ भी कहने की ज़रूरत नहीं रहती, पता चल ही जाता है। चोरी का भी पता चल जाता है तो फिर यह तो..! बहुत गुप्तरूप से रखी गई चीज़ें जब ज़ाहिर होती हैं तो सिर चढ़कर बोलती हैं।

हर एक बात में सिन्सियर रहना वह मोक्ष में जाने की निशानी है! किसी को पता चले बिना भी अगर तू दुनिया के लिए कुछ अच्छा करेगा तब भी लोग जान जाएँगे, यह दुनिया का एक सब से बड़ा नियम है।

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा रहता था कि पोल मार दो, यानी कि ऐसा सब चलता है।

दादाश्री : उसी से ही सब बिगड़ गया है न! सत्य हमेशा ही उगता है, वर्ना दूसरा तो उगा हुआ पेड़ भी सूख जाएगा।

सामने वाला धोखा दे तो भी आपको सिन्सियर रहना है। यह पार उतरने की चाबी है!

लिखे सिन्सियरली, रहे इन्सिन्सियरली

ये सभी लिखते हैं, आपका 'योर्ज़ सिन्सियरली' कोई सिन्सियर नहीं रहता। बस लिखने के लिए, कि मैं आपका वफादार हूँ। 'योर्ज़ सिन्सियरली' कहता है।

सिन्सियरली शब्द का ज़्यादा से ज़्यादा उपयोग इस काल में हुआ है क्योंकि हर एक व्यक्ति 'यॉर्ज़ सिन्सियरली' लिखता है न?

प्रश्नकर्ता : बस इतना ही है कि वह कागज़ में लिखता है, वहीं तक!

दादाश्री : नहीं, उतना भी नहीं। ऐसा क्यों? सिन्सियर शब्द का अर्थ क्या अलग-अलग है? चिट्ठी लिखते हैं तब 'यॉर्ज़ सिन्सियरली' लिखते हैं। सही है न!

प्रश्नकर्ता : वहाँ तो लिखने की खातिर लिखना रहता है।

दादाश्री : ऐसा रूटीन हो गया है।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : तो हमें क्या उस व्यक्ति को इन्सिन्सियर समझना है? स्कूल में आप जो लिखते हो 'यॉर्ज़ सिन्सियरली', वह नहीं चलेगा। रूटीन में वह जो सिन्सियर लिखते हो, वैसा नहीं चलेगा। अरे, सरकार भी 'सिन्सियरली' लिखती हैं। सरकार

के हर पत्र में 'सिन्सियरली लिखते हैं। लेकिन सही अर्थों में सिन्सियरिटी होनी चाहिए न! मुँह पर कहते हैं 'सिन्सियरली' लेकिन रहते हैं 'इन्सिन्सियरली'। ऐसा कैसे चलेगा?

प्रश्नकर्ता : और फिर कंपनी की तरफ से लिखते हैं।

दादाश्री : हाँ, कंपनी की तरफ से 'यॉर्ज़ सिन्सियरली' लिखते हैं। काम ही हो गया न उन लोगों का! यानी ये लोग बात को कहाँ ले गए! उसके बजाय अगर 'इन्सिन्सियरली' लिखते न, तो पता चलता कि हमें सिन्सियर रहने की ज़रूरत है। ये तो सिन्सियर हो ही गए हैं, तो अब बाकी क्या रहा? देखो तो सही? कैसा आश्चर्य हो गया है! आप किसी के प्रति सिन्सियर नहीं रहे फिर भी सिन्सियरली लिखते रहते हो!

प्रश्नकर्ता : और 'यॉर्ज़ सिन्सियरली' लिखते हैं। बिना समझे!

दादाश्री : नहीं, उसका रूटीन बन गया है। सिन्सियरली के अर्थ का लोगों ने घात कर दिया है। सिन्सियरिटी का घात करके आप क्या पाओगे? सिन्सियरिटी का घात नहीं होना चाहिए। लोगों ने तो घात करने में कुछ भी बाकी ही नहीं रखा न! यहाँ के लोग ही क्यों, बाकी सब ने भी। सभी जगह पर तो यही का यही। लेकिन फॉरेन वालों को जितना समझ में आता है उतना ही घात करेंगे न! फॉरेन वाले उनकी अपनी समझ से करते हैं।

प्रश्नकर्ता : अभी तो पार्लियामेन्ट के मेम्बर भी सिन्सियर नहीं हैं।

दादाश्री : मेम्बेर्स अपनी वाइफ के प्रति सिन्सियर नहीं है तो आपके प्रति कैसे रहेंगे? आजकल समय विचित्र है। इसमें किसी का दोष नहीं है। हम ऐसा नहीं कहते कि ये खराब हैं और ये अच्छे हैं, सब संयोगों के अनुसार है।

यदि सरकार ने इन लोगों को लिखा होता कि ''भाई, 'इन्सिन्सियरली' लिखना।'' तो उन्हें पता चलता कि अभी सिन्सियर होने की ज़रूरत है। ये तो यों ही सिन्सियर बन बैठे हैं। जैसे कि कहते हैं न, नौकरी में सीनियर बन गए, वैसे ही ये सिन्सियर बन गए!

लोगों ने लौकिक में इसका उपयोग करना शुरू कर दिया इसलिए सिन्सियरली के अर्थ को मिट्टी में मिला दिया। मौलिक अर्थ ग़ायब हो गया और अर्थ मिट्टी में मिल गया। सिन्सियर यानी सिन्सियर!

समझो, यथार्थ अर्थ सिन्सियरिटी का

प्रश्नकर्ता : दादा, वे जो 35 गुण प्राप्त करने हैं, उसके लिए तो आपने मुख्य बात कह ही दी है कि अगर सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी, ये दो चीज़ें होंगी तो तू मोक्ष में चला जाएगा।

दादाश्री : हाँ, वे दोनों, सिन्सियरिटी और मॉरेलिटी! वह तो आपको पता ही है शब्द बोलते हो लेकिन अर्थ नहीं समझते। मेरे पास आओगे तो मैं आपको अर्थ समझा दूँगा। हर कोई ऑफिसर यह शब्द बोलता है और पत्र में लिखता है, यॉर सिन्सियर। तू अपनी, पत्नी के प्रति भी, एक घंटे भी सिन्सियर नहीं रहा फिर यहाँ कैसे सिन्सियर रहेगा? यह तो रूटीन है। रूटीन के प्रति सिन्सियर है। हम सचमुच में सिन्सियर बनाना चाहते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, पत्नी के प्रति कैसे सिन्सियर रह सकते हैं।

दादाश्री : पत्नी ने कभी आपको सुना दिया हो, तब भी अगर आपको उसके लिए खराब विचार न आएँ, तो सिन्सियर रह पाएँगे। खराब

विचार तक न आए। वह तो स्त्री जाति है, वह तो सुना भी सकती है। वर्ना हम बड़े कैसे कहलाएँगे? बड़ा व्यक्ति छोटे व्यक्ति के सात शब्द सुन लेता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह तो उल्टा है। यों तो छोटों को सुनना चाहिए।

दादाश्री : बड़े व्यक्ति का पेट बड़ा होता है या नहीं? समा सकता है या नहीं।

जहाँ सिन्सियरिटी वहाँ सच्चा प्रेम

सामने वाले से चाहे कितने भी नियम टूटें, चाहे आपस में दिए गए कितने ही वचन तोड़े फिर भी सिन्सियरिटी नहीं जानी चाहिए। सिन्सियरिटी सिर्फ वर्तन (व्यवहार) में ही नहीं लेकिन आँखों में से भी नहीं जानी चाहिए, तब समझना कि यहाँ प्रेम है। अत: ऐसा प्रेम खोजना। इसे प्रेम नहीं मानना। यह बाहर जो चल रहा है, वह बाज़ारू प्रेम है, आसक्ति है। वह विनाश लाएगा। फिर भी कोई चारा नहीं है। उसके लिए मैं आपको रास्ता बताऊँगा। आसक्ति में पड़े बिना भी चारा ही नहीं है न!

सिन्सियरिटी यानी हार्टिली

प्रश्नकर्ता : जो भी व्यवहार हो, उस व्यवहार को पूरी तरह से निभाए तो उसे सिन्सियरिटी माना जाएगा? यानी कि मान लीजिए पिता-पुत्र हैं, उन दोनों के बीच व्यवहार है, तो अगर पूरी तरह से पिता के रूप में व्यवहार निभाए तो वहाँ उसे सिन्सियरिटी कहा जाएगा?

दादाश्री : नहीं! वह तो शायद नाटकीय तौर पर भी निभा रहा हो! सिन्सियरिटी के बगैर भी निभा सकता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वहाँ पर उसकी परिभाषा क्या है?

दादाश्री : सिन्सियरिटी अर्थात् हार्टिली। हार्टिली रहे बगैर भी बाप बेटे से व्यवहार कर सकता है। यह तो ऐसा है कि उसकी अपनी माँ नहीं हो और किसी और की माँ हो और वहाँ खाना-पीना हो न तो 'माँ जी, माँ जी' करता रहता है। नहीं कहता? तो क्या वह सिन्सियरिटी है? हार्टिली यानी जहाँ पर बदले में कुछ नहीं लेना है, वहाँ पर सिन्सियर रहना।

अंतर समझो, टूली और सिन्सियरिटी में

ज्ञानीपुरुष के प्रति, आत्मा के प्रति, रियल के प्रति हमेशा सिन्सियरली रहना चाहिए और देह के प्रति, देहाध्यास के प्रति, उन सभी के प्रति टूली रहना चाहिए। वहाँ सिन्सियर नहीं रहना है। टूली। हम यॉर्ज़ टूली लिखते हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, लिखते हैं, यॉर्ज़ टूली।

दादाश्री : वहाँ सिन्सियर नहीं। सिन्सियर तो आत्मा और ज्ञानीपुरुष के प्रति रहना है; बाकी जगहों पर टूली रहना है। हम बाकी जगहों पर टूली रहते हैं, सिन्सियर नहीं रहते। सिन्सियर आपके आत्मा के प्रति रहते हैं, चंदू भाई के प्रति टूली। आपको ऐसा समझना चाहिए कि इस जगत् में यह सब टूली है। वहाँ पर यदि सिन्सियर रहोगे तो फिर आत्मा में टूली रह पाओगे। जहाँ सिन्सियर रहना है, वहाँ टूली रहोगे और टूली है वहाँ सिन्सियर रहोगे तो हमें उसका लाभ नहीं मिलेगा, जितना मिलना चाहिए उतना! हमें उसका जितना मिलना चाहिए उतना लाभ नहीं मिलेगा। इसलिए यह समझने की ज़रूरत है कि कहाँ टूली का उपयोग करना है और कहाँ सिन्सियरली का। ये लोग पत्र लिखते हैं, तब वे हमें ऐसा लिखते हैं न 'टूली, यॉर्ज़ टूली'! तो हमें यॉर्ज़ टूली रखना है और यॉर्ज़ सिन्सियरली को समझ लेना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा अंतर तो कोई बता

ही नहीं सकता न! टूली और सिन्सियरली का उपयोग तो रोज़ करते हैं, लेकिन कहाँ करना है, वह किसे पता है?

दादाश्री : इसलिए ये दोनों वाक्य, टूली और सिन्सियरली, बहुत समझने जैसे हैं।

प्रश्नकर्ता : सही बात है, समझने जैसे हैं। क्योंकि हम कहीं भी खिंच जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, बस ऐसा ही हुआ है। इसलिए प्रेम उत्पन्न ही नहीं होता न! अगर देह के प्रति भी सिन्सियरली रहना हो, तो प्रेम कैसे उत्पन्न होगा?

सभी के आत्मा के प्रति हमें सिन्सियर रहना है और सभी के देह के प्रति टूली रहना है। वहाँ सिन्सियर रहने से आसक्ति हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ज्ञानीपुरुष के देह का आधार लेकर...

दादाश्री : वह तो स्वाभाविक प्रेम उत्पन्न होता है। प्रेम से प्रेम उत्पन्न होता है, लेकिन वह प्रेम है, वह आसक्ति नहीं है। आसक्ति कब कहलाती है कि जब कोई संसारी चीज़ लेनी हो। संसारी चीज़ का हेतु हो, तब। इस सच्चे सुख के लिए तो ऐसा होगा। वह होगा। उसमें परेशानी नहीं है। हम पर जो प्रेम रहता है उसमें परेशानी नहीं है। वह आपकी हेल्प करेगा, बाकी जगहों से प्रेम उठा देगा। अन्य गलत जगहों पर रहने वाले प्रेम को वहाँ से उठा देगा।

प्रश्नकर्ता : तो यह हमारे हृदय में जो भाव जागृत हुआ है, वह आपके हृदय के प्रेम का ही परिणाम है?

दादाश्री : हाँ, ये प्रेम स्वरूप के भाव उत्पन्न होते हैं। जहाँ सांसारिक सगाई नहीं है। लेना नहीं, देना नहीं, नो रिलेशन। रिलेशन में तो हर कोई करता है।

प्रश्नकर्ता : यह एक प्रकार की डिवाइन सोसाइटी है? इसे डिवाइन सोसाइटी कह सकते हैं?

दादाश्री : हाँ, हाँ डिवाइन। अपनी ही सोसाइटी, अपना ही।

देह के प्रति टूली और आत्मा के प्रति सिन्सियरली

प्रश्नकर्ता : आपकी बात से मेरे मन में दो दूसरे प्रश्न खड़े हो गए। एक तो यह कि हमें आपके प्रति सिन्सियर कैसे रहना है? और दूसरा यह कि यह टूली वास्तव में क्या है? देह के प्रति टूली रहने का अर्थ क्या है?

दादाश्री : टूली और सिन्सियरली का ऐसा है कि सिन्सियरली में यदि कोई भूल-चूक हो जाए तो उस भूल को जमा नहीं किया जाता, टूली में भूल-चूक हो जाए तो वह जमा हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह किसी उदाहरण से समझ में आएगा। कोई उदाहरण होगा न?

दादाश्री : मैं कभी आपको डाँटू। यों तो हम डाँटते नहीं हैं और कभी अगर डाँटा, तो इन संयोगों में भी अगर आप सिन्सियर रहते हो न, तो वह भीतर जमा-उधार नहीं होगा और आप हिसाब भी नहीं लगाते, मेरे शब्दों का हिसाब नहीं लगाते। यदि आप उल्टा करोगे फिर भी मैं हिसाब नहीं लगाऊँगा। अगर मैं हिसाब लगाऊँगा तो मेरा प्रेम चला जाएगा इसलिए जो हिसाब नहीं लगाता, वह सिन्सियरली है। और टूली में तो हिसाब लगाता है कि आज (गैस) वायु हो गई इसलिए कल इतना-इतना नहीं खाऊँ तो अच्छा। उसमें हिसाब लगाता है।

टूली तो, जहाँ रिलेशन नहीं होते वहाँ पूरा संसार हमेशा ही टूली रहता है और सिन्सियरली कुछ ही लोगों के लिए रहता है। हमें खास तौर पर आत्मा के प्रति सिन्सियरली रहना है। लोग संबंधियों के प्रति रहते हैं और हमें आत्मा के प्रति रहना है। बाहर लोग जो टूली रहते हैं, वह चंदू भाई रहता है। बाहर के भाग में टूली रहता है इसलिए टूली लगभग सुपरफ्लुअस जैसा है, नाटकीय जैसा। नाटकीय होता है न, लगभग उस जैसा है यह।

बुद्धि तुड़वाती है सिन्सियरिटी

हर चीज़ का निबेड़ा तो लाना पड़ेगा न? अगर निबेड़ा ही नहीं लाएँगे तो कैसे चलेगा? और निबेड़ा भी ऐसा होना चाहिए कि सभी बुद्धिशालियों को मान्य हो। जहाँ मतभेद हो जाए उसे निबेड़ा नहीं कहेंगे। बाद में यदि नहीं मानना हो तो न माने, वह अलग बात है परंतु एक बार मान्य हो जाए, ऐसा होना चाहिए! सर्वमान्य होना चाहिए। बुद्धिशाली वर्ग को समझ में न आए, ऐसा हो ही नहीं सकता।

और फिर वह बुद्धि, बुद्धिशालियों में भी वह नम्रता में रहे,यानी नम्रता की तरफ जाए। और सरलता की तरफ जाए> ऐसी बुद्धि जो दोनों तरफ जाए, वह बुद्धि श्रेष्ठ कहलाती है। बुद्धिमान में भी जो बुद्धि नम्रता की तरफ जाए, वह बुद्धि श्रेष्ठ मानी जाती है और जो बुद्धि कैफ़ बढ़ाए वह श्रेष्ठ नहीं कहलाती। वह तो नुकसान कर देगी। कैफ़ बढ़ने पर मनुष्य का विकास रुक जाता है। अगर ऐसा कैफ़ बढ़ा कि 'मैं जानता हूँ' तो खत्म हो जाएगा। फिर उसे कुछ भी जानना बाकी ही नहीं रहा न! आधा घड़ा (मटका) भरा हो और कहेगा, 'मेरा घड़ा भर गया।' जबकि प्रेम वाला तो कहीं से भी संपादन करता है, नम्रता वाला। नम्रता वाली बुद्धि होनी चाहिए। हमें बुद्धि को रोज़ चेक करना चाहिए कि मेरी बुद्धि नम्रता की ओर जा रही है या अकड़बाज़ हो रही है। हमें हमारा देख लेना चाहिए।

ज्ञानी नहीं देते कुछ भी बिना तौले

प्रश्नकर्ता : यदि दादा हमें डाँटें तो हमें सोचना तो पड़ेगा न कि हमें क्यों डाँटा? हम से क्या गलती हो गई?

दादाश्री : वह ठीक है। उस पर सोचना चाहिए, ऐसा सोचने में कोई परेशानी नहीं है।

'दादा ने मुझे बगैर सोचे कह दिया, ऐसा मानना गलत कहा जाएगा। या फिर अगर ऐसा कहेगा कि 'दादा को ऐसा नहीं करना चाहिए' तो वह भी गलत कहा जाएगा। हम तो हर एक बात तौलकर ही करते हैं। बिना तौले नहीं करते। किसी को ऐसा लग सकता है कि बिना तौले देने लगे हैं, लेकिन हम बिना तौले नहीं देते। बिना तौले तो लोग देते हैं। यों ही जो लड़ते-झगड़ते हैं, वे बिना तौले देते हैं, हम नहीं देते हैं। हम तो तौलकर देते हैं।

यदि ऐसा कहा जाए कि 'दादा ऐसे क्यों कहते रहते हैं' तो, वह भयंकर जोखिम है। उसे जोखिम है, मुझे कोई जोखिम नहीं है। मुझे कोई परेशानी नहीं है लेकिन उसे जोखिम है। इसलिए वहाँ सावधान रहना। ऐसा नहीं कहना, ऐसा सोचना भी नहीं। हमारे पास बिना तौल कुछ भी नहीं है। बिना तौले तो लोग देते हैं। 'आप में अक्ल नहीं है, आप ऐसे हो' कहते हैं। अरे! लेकिन तौलकर दे न! अक्ल नहीं फिर भी तू तौलकर दे न! इतना नोबल है कि बिना तौले देता ही रहता है! नोबल इंसान!

मैं पहले बिना तौले देता था। मुझे पता है

न कि बिना तौले देता था। तौलकर दिया होता तो अच्छा दिखाई देता न?

प्रश्नकर्ता : दादा एकाध उदाहरण दीजिए न, आप बिना तौले कैसे देते थे?

दादाश्री : अरे! सामने वाले का सिर भन्ना जाए ऐसा! मैं कुछ कहता तो सिर भन्ना जाता था! मुझे वह पता है लोगों को क्या होता होगा, उसका भी मुझे पता है क्योंकि मैं जिन रास्तों से आया हूँ वे सारे रास्ते मुझे याद हैं न! इसलिए मैं आपसे कहता हूँ न कि, 'मेरे पीछे-पीछे, पीछे-पीछे चले आओ। आगे चले जाओगे तो परेशानी नहीं है लेकिन बहुत पीछे नहीं रह जाना,' ऐसा कह रहा हूँ।

ज्ञानी के प्रति सिन्सियर रहकर, काम निकाल लो

प्रश्नकर्ता : दादा! आपके पीछे चलें, उतना बहुत है।

दादाश्री : नहीं बहुत पीछे नहीं रह जाना।

प्रश्नकर्ता : बहुत नहीं लेकिन पीछे ही रहें तो बहुत है। दादा के पीछे।

दादाश्री : मुझे इंतज़ार न करना पड़े! यों पीछे देखूँ तो चंदू भाई दिखाई दें, सभी दिखाई देने चाहिए। आगे निकल जाओगे तो परेशानी नहीं है। आगे निकल जाओ तो मैं लगाम सौंपने को भी तैयार हूँ। मुझे तो इसमें कुछ भी नहीं है और यदि लगाम चाहिए तो मैं वह भी देने को तैयार हूँ।

प्रश्नकर्ता : दादा, यों पीछे पड़ जाने का मतलब क्या है? वह ज़रा स्पष्ट समझाइए।

दादाश्री : पीछे पड़ने का मतलब यह है कि आपका ध्यान हमारी तरफ ही रहना चाहिए और यही कि, 'दादा के साथ ही हूँ और अब दादा से दूर जाना ही नहीं है,' ऐसा रहना चाहिए।

सांसारिक चीज़ों पर जो भाव है न, उसका डिवैल्यूएशन करते (कीमत घटाते) जाना पड़ेगा, तभी साथ में रह पाएँगे न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह सही बात है। डिवैल्यूएशन करने से क्या हो सकता है?

दादाश्री : ये लोग इतने बड़े पाउन्ड का डिवैल्यूएशन करते हैं, तो हमें इसमें क्या परेशानी रखनी है? ब्रिटिश गवर्मेन्ट इतने बड़े पाउन्ड का डिवैल्यूएशन करती है, तो हमें उससे क्या फायदा? रोज़ खबर आती है कि दस पैसे का डिवैल्यूएशन हो गया, तब क्या उनको अच्छा लगता होगा, बेचारों को? क्या हो सकता है? ऐसे संयोग आते हैं तब क्या करना पड़ता है?

जुदाई नहीं, अंत:करण की एकता

सिन्सियर अर्थात् उसमें अंत:करण की एकता की ज़रूरत है! जिसे 'दिल से' कहते हैं न! दिल यानी अंत:करण की एकता। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार की।-दिल यानी मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार की, अंत:करण की एकता रहे तब दिल से कहा जाएगा। फिर मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार एक तरफ ही रहते हैं। अन्य कोई विरोधाभास नहीं रहता। जबकि अभी तो मन भी विरोधाभासी, बुद्धि भी विरोधाभासी, चित्त भी विरोधाभासी, अहंकार भी विरोधाभासी इसे सिन्सियरली कैसे कहेंगे? अपना यह सत्संग दिल से होता है न! बस! तो भी बहुत हो गया। फिर मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार अलग-अलग नहीं रहेंगे।

ऑफिस में लोग सिन्सियरली लिखते हैं न, उनमें मन भी विरोधाभासी, बुद्धि भी विरोधाभासी, अहंकार भी विरोधाभासी, जबकि इनकी एकता की ज़रूरत है। ऐसा कितनों को मिलता है? नीरू बहन को इससे ज़्यादा और क्या मिलता है? अंतर से, दिल से भी और फिर ऊपर से, देह से भी।

प्रश्नकर्ता : दिल और देह दोनों।

दादाश्री : हाँ, दोनों तरह की सिन्सियरिटी है इनके पास लेकिन अगर एक तरह की प्राप्त हो जाए तो भी बहुत था। दिल से रहे तो भी बहुत है। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार अलग नहीं पड़ने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : चारों के चारों एक रहने चाहिए।

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह हुआ कि मन-वचन-काया की एकता से रहना चाहिए?

दादाश्री : एकता रहनी ही चाहिए। उसके बाद ही सिन्सियरली रहा जा सकता है, वर्ना तब तक सिन्सियरली नहीं माना जाएगा। लेकिन एकता ऐसी कि कभी भी उसमें कमी न आए। खुद का सिन्सियरिटी का ध्येय न चूके।

सिन्सियरिटी से परमात्मा पद की प्राप्ति

सिन्सियर यानी तन-मन-वचन के प्रति सच्चाई और फिर वे गुरु के प्रति भी सिन्सियर रहते हैं। गुरु डाँटे तब भी सिन्सियरिटी इधर-उधर नहीं हो, तो वह मोक्ष पाएगा।

सिन्सियर का क्या अर्थ है? अपने आप के प्रति सिन्सियर रहो। मन के प्रति सिन्सियर रहो, बुद्धि के प्रति सिन्सियर रहो, अहंकार के प्रति सिन्सियर रहो। उनके साथ छल-कपट मत करो। लोग तो खुद अपने साथ ही छल-कपट करते हैं, क्या वह शोभा देता है?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल नहीं।

दादाश्री : सिन्सियर यानी सिन्सियर! इंसान यदि खुद अपने आप के प्रति सिन्सियर रहे तो वह परमात्मा बन जाता है, फिर चाहे ज्ञानी मिलें या न मिलें! यदि अपने आप के प्रति सिन्सियर रहने से (उसे) सभी संयोग मिल जाते हैं।

प्रकट 'ज्ञानीपुरुष' के प्रति जितनी सिन्सियरिटी रखी जाए उतना ही अपना स्वरूप प्रकट हो जाता है।

प्रकट की भक्ति करो सिन्सियरली

प्रश्नकर्ता : प्रकट की भक्ति कैसे करनी है?

दादाश्री : प्रकट की भक्ति तो हमें तन-मन और वचन की एकता से करनी चाहिए और वह भी सिन्सियरली। सिन्सियर रहने में जितनी कमी उतना ही अपना कच्चा। उसमें इस बुद्धि का उपयोग नहीं करना है। प्रकट की भक्ति करने में बुद्धि का उपयोग किया तो हमारा नुकसान करेगी।

प्रश्नकर्ता : अबुध बनकर उपयोग करना चाहिए।

दादाश्री : अबुध तो नहीं बन सकते। इंसान को अबुध बनने में तो बहुत समय लगता है। अबुध हो गए फिर तो हो गया, पूर्णाहूति हो गई, निरालंब हो गया। लेकिन अगर बुद्धि का उपयोग हो रहा है तो हमें समझ जाना है कि अगर बुद्धि का उपयोग होगा तो हमें नुकसान होगा। फायदा नहीं मिलेगा। इसलिए बुद्धि का उपयोग नहीं होना चाहिए। जेब काटने वाले के साथ भी बुद्धि का उपयोग नहीं करना चाहिए। वहाँ भी सिन्सियर ही, उसी भाव से रहना चाहिए। और यदि बुद्धि का उपयोग किया तो गड़बड़ हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : एक उदाहरण दीजिए न, दादा !

दादाश्री : अब यदि कोई कहे कि मुझे जेब काटने में एक्सपर्ट बनना है, और अगर वह कॉलेज में जाए तो तीस साल में भी वह बन नहीं पाएगा क्योंकि उसके प्रॉफेसर ही नहीं हैं।

तो हमें ऐसा कहना पड़ेगा कि 'गाँव में जेब काटने में किसका पहला नंबर आता है? उसे ढूँढ निकालो।' उसके यहाँ जाकर उसे सलाम करके बच्चे को सौंप दो, कि भई 'यह बच्चा आपको सौंप दिया' इसे अपने जैसा बना दीजिए। निरंतर आपकी सेवा में रहेगा।' बच्चे को समझा देना कि दोनों टाइम खाना-खाने के लिए घर आ जाना। कपड़े-वपड़े सब अपने घर के। ये तुझे जो भी काम बताएँ वह करना, फ्री ऑफ कोस्ट! और तू मुझे वह बताना वह कौन सी सिगरेट पीता है, रोज़ ज़ेब में उस सिगरेट के दो पैकेट और माचिस की डिब्बी लेकर जाना। वह ज़ेब में हाथ डालने जाए, उससे पहले सिगरेट निकालकर देना और सुलगा देना। बाकी और क्या करना है? 'उसकी आँखों के सामने देखते रहना बस!' इतना सिखाया तो ऑल राइट। छः महीने में तो एकदम एक्सपर्ट बन जाएगा।

प्रश्नकर्ता : सही ट्रेनिंग मिलनी चाहिए उसे।

दादाश्री : नहीं! प्रकट की ट्रेनिंग से वह छः महीने में एक्सपर्ट बन जाएगा, जबकि कॉलेज में बीस साल में भी नहीं बन सकेगा। कुछ भी नहीं सीख पाएगा। ऐसा तैयार होगा कि पकड़ा जाएगा। ज़ेब काटते हुए पकड़ा जाए तो वह ट्रेनिंग किस काम की? सही ट्रेनिंग तो किसे कहते हैं? सी.आई.डी. की ज़ेब काटे तो भी न पकड़ा जाए, वह सही ट्रेनिंग कहलाएगी। वह उस बच्चे को एक्सपर्ट से मिल जाएगी। प्रकट ही काम करता है, इस दुनिया में! बाकी सभी बातें गलत हैं।

जो सिन्सियरली मार्ग है वह पूरा ही सहज का है और टूली मार्ग असहज का है। सहज रहेगा तभी काम होगा।

'ज्ञानीपुरुष का *राजीपा* (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता)' और 'सिन्सियरिटी' इन दोनों के गुणा से सारे कार्य सफल हो सकते हैं!

सिन्सियरिटी के साथ हैं, मन व हृदय

प्रश्नकर्ता : दादा, मुझे मन और हृदय के बारे में स्पष्टता चाहिए। 'मन चंचल है, हृदय स्थिर है और हृदय का उल्लास हमेशा रहता है,' इस बात का समाधान चाहिए।

दादाश्री : मन के चंचल होने की वजह से स्थिर के साथ स्थिरता नहीं रखी जा सकती। जितनी स्थिरता रहेगी, उतना ही हृदय में एकाकार रहेगा और तभी ऐसा कहा जाएगा कि 'हृदय काम कर रहा है।' वर्ना कहेंगे कि 'काम ही नहीं कर रहा!' मन स्थिर हुआ तभी कहेंगे कि हृदय काम कर रहा है।

प्रश्नकर्ता : हृदय शब्द द्वारा आप क्या कहना चाहते हैं?

दादाश्री : हृदय अर्थात् जो अपनी उल्टी या सीधी गति के प्रयाण को दिखाता है। सिन्सियरिटी या इन्सिन्सियरिटी दो भाग हैं न? जिसमें सिन्सियरिटी होगी, जिसमें सिन्सियरिटी हो तो फिर उसका मन सिन्सियारिटी में उसकी हेल्प करेगा।

अब स्थूल मन का जो स्थान है न! वह हृदय के थ्रू (माध्यम से) है और सूक्ष्म मन यहाँ कपाल में है। स्थूल मन हृदय में से उत्पन्न होता है। जैसे नल में पानी यहाँ से आता है लेकिन टंकी ऊपर होती है न! उसी तरह से सब है। यानी जो मन हृदय में है, अगर वह मन स्थिर हो जाए तो काम निकाल लेगा। हाँ, यदि मन चंचल होगा तो काम नहीं निकाल सकेगा।

यदि मन सिन्सियरिटी में रहे तो मोक्ष में ले जाता है। लोग कहते हैं न कि 'मेरा दिल नहीं लग रहा!' सामने वाला सिन्सियर हो और हम सिन्सियर रहें तो दिल लगेगा, नहीं तो दिल नहीं लगेगा क्योंकि स्वभाव भिन्न हैं। स्वभाव में भिन्नता होने

से दिल नहीं लगता और अगर स्वभाव में एकता है तो दिल लग जाता है। फिर कहेगा, 'दिल्लगी, दिल्लगी।' सिनेमा वाले एक्टर पर दिल आ जाता है न! हम कितने भी अच्छे फर्स्ट क्लास कपड़े पहनें फिर भी दिल नहीं लगता। वह है स्वभाव की एकता। वे दोनों डाउनवर्ड (नीचे) जाएँगे।

हृदय के दो प्रकार हैं : एक सिन्सियर और एक इन्सिन्सियर। इन्सिन्सियर सिन्सियर नहीं बन सकता और सिन्सियर हो तो वह इन्सिन्सियर नहीं बनता और कितनों का मिक्स्चर के रूप में होता है।

सिर्फ इतना ही कि 'हार्टिली, हार्टिली' बोलता रहता है लेकिन मन का और हृदय का पक्का संबंध है। वह हार्ट के थ्रू है। यानी हार्ट की जो सिन्सियरिटी या इन्सिन्सियरिटी है, उसमें मन एकाकार हो जाए, तब सामने वाले का दिल लगता है। तब वह कहता है, 'मुझे दिल्लगी हो गई।'

प्रश्नकर्ता : यानी सिन्सियरिटी में मन एकाकार हो जाए तो भी दिल्लगी और इन्सिन्सियरिटी में मन एकाकार हो जाए तब भी दिल्लगी होती है?

दादाश्री : इन्सिन्सियरिटी में मन (मैं) एकाकार हो जाए तो ज़्यादा दिल्लगी होती है (गिरने में) सिन्सियरिटी से भी ज़्यादा! और यदि सिन्सियरिटी में मन (मैं) एकाकार हो जाए तो थोड़ी कम दिल्लगी लगती है ऊपर उठने में।

इन्सिन्सियरिटी भी है एक अच्छा गुण

इन्सिन्सियरिटी भी एक अच्छा गुण है और सिन्सियरिटी भी अच्छा गुण है, लेकिन इन्सिन्सियर रह नहीं पाता। अगर इन्सिन्सियर हो जाओगे तो वह बहुत लाभकारी है, लेकिन यह न तो सिन्सियर रहता है और न ही इन्सिन्सियर। या तो सिन्सियर बन या फिर कम्प्लीट इन्सिन्सियर बन जा। यह तो अर्धदग्ध (आधी जली लकड़ी जैसा) रहता है। न तो सिन्सियर रहता है और ना ही इन्सिन्सियर। अर्धदग्ध आपको समझ में आया न? अधिकतर भाग वैसा ही है, उसी कारण ये ज़बरदस्त दु:ख हैं न!

वर्ना अगर इन्सिन्सियर रहकर आगे चलेगा तो फिर वह किसी भी लास्ट स्टेशन तक पहुँचेगा। रोंग स्टेशन तो रोंग स्टेशन, लेकिन पहुँचेगा वह लास्ट स्टेशन तक पहुँच जाएगा। और वहाँ से गाड़ी वापस मुड़ेगी लेकिन यह तो बीच में सूरत में हीं भटक रहा है, कितने ही वर्षों से। न तो आगे जाता है, न ही पीछे। आगे मार्ग नहीं मिलता। सिन्सियरिटी रहे न तो उत्तम है।

प्रश्नकर्ता : सिन्सियर मुझे समझ में आया लेकिन आप कहते हैं इन्सिन्सियर रहना भी सद्गुण है, वह समझ में नहीं आता।

दादाश्री : इन्सिन्सियर तो बहुत अच्छा गुण है, लेकिन मनुष्य वैसे बन नहीं सकते।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इन्सिन्सियर किसे रहना है?

दादाश्री : ऐसा है, कोई इन्सिन्सियर है तो वह अच्छा गुण है। वह जल्दी मोक्ष में ले जाएगा। पहले वह पाताल में (नर्क) ले जाएगा। फिर वहाँ से जब वापस मुड़ेगा, तब ठेठ आगे मोक्ष तक ले जाएगा।

सिन्सियर रहना आसान है, लेकिन इन्सिन्सियर रहना आसान नहीं है। उसके लिए तो यहाँ सभी प्रकार की मज़बूती की ज़रूरत पड़ेगी, मानसिक मज़बूती की ज़रूरत पड़ेगी। फिर शारीरिक मज़बूती की ज़रूरत पड़ेगी, उसमें पाशवता की ज़रूरत पड़ेगी। इन्सिन्सियरिटी में तो इन सभी

सामानों की ज़रूरत है लेकिन सिन्सियरिटी में सामान नहीं होगा तो चलेगा। ये तो अर्धदग्ध रहे। वह इन्सिन्सियर रहता है लेकिन पूरी तरह से इन्सिन्सियर नहीं रह सकता। उसके बजाय हो जा न पूरा इन्सिन्सियर!

जितने इन्सिन्सियर थे न, उनके पास सिन्सियरिटी नहीं थी। भगवान की छत्रछाया में थे फिर भी वे भगवान की नहीं सुनते थे। ऐसों का *निकाल* (निपटारा) अच्छे से हो जाता है। इन्सिन्सियर यानी एक बार लुढ़ककर फिर ऊपर चढ़ जाता है जबकि यह नहीं लुढ़कता। न तो नीचे जाता है, न ही ऊपर और परेशान होता रहता है। इन्सिन्सियरिटी कोई गलत गुण नहीं है। वे दोनों सगे भाई हैं।

धर्म के प्रति भी सिन्सियर नहीं और नहीं किसी और के प्रति सिन्सियर रहे, वह है अपनी यह प्रजा। अगर अधर्म के प्रति सिन्सियर रहता तो भी कल्याण हो जाता लेकिन अधर्म के प्रति भी सिन्सियर नहीं रहता। अधर्म हो तो भी भगवान मिल जाते हैं या फिर अगर पूरा धर्म हो, तब मिलते हैं। सभी जगह यही है, धर्म भी नहीं, अधर्म भी नहीं, किसी भी जगह ठिकाना नहीं।

इन्सिन्सियरिटी का परिणाम

प्रश्नकर्ता : इन्सिन्सियारिटी यानी चाणक्य नीति?

दादाश्री : नहीं, चाणक्य नीति अच्छी नहीं है। चाणक्य नीति क्या है? कि जहाँ लाभ उठाने को मिले वहाँ लाभ उठाना। दोनों तरफ से लाभ उठाता है। जबकि इन्सिन्सियर यानी इन्सिन्सियर ही। उसी तरफ की दिशा। यह चाणक्य नीति तो गलत है। यह दुविधा नीति है, वे ऐसे भी करते हैं और वैसे भी करते हैं। उन चाणक्य नीति वालों के साथ हमें नहीं रहना चाहिए। उनके बजाय इन्सिन्सियर अच्छे। हम जानते हैं कि यह व्यक्ति इन्सिन्सियर है तो उसे हम सब्ज़ी लेने भेजेंगे ही नहीं न! अगर इन्सिन्सियर को टिकिट लेने भेजें कि 'चालीस टिकिट ले आना' तो वह लेकर आएगा, लेकिन सब्ज़ी लेने नहीं भेज सकते। वह टिकिट में कमिशन नहीं ले सकता, सब्ज़ी में कमिशन निकाल लेगा। इसलिए हमें समझ में आता है कि इन्सिन्सियर ही है।

इन्सिन्सियर को परेशानी है ही नहीं। वह तो कहीं से भी शिकार खोज निकालता है। उसे तो समुद्र में भी मिल जाता है, ज़मीन पर भी मिल जाता है और आकाश में भी शिकार मिल जाता है। यानी जहाँ देखे वहाँ उसे शिकार मिल जाता है।

इन्सिन्सियर आदमी तो अच्छा है लेकिन हमें समझ लेना चाहिए कि भाई, इस प्रकार से क्वालिफाइड हैं। उनकी 'डिस' अपने पास रखना, 'डिस' (डिसक्वालिफाइड में से डिस) निगल जाना और कहना कि क्वालिफाइड है। यह दुनिया बहुत विचित्र है। इन्सिन्सियरिटी के कारण ही तो सातवीं नर्क में जाते हैं और फिर एक-दो जन्म में यहाँ पर भगवान भी बन सकता है।

पूर्ण इन्सिन्सियरिटी दिलवाए मोक्ष

जो अस्सी प्रतिशत इन्सिन्सियर है, उसे हम सिन्सियर बनने के लिए नहीं कहते। अस्सी प्रतिशत इन्सिन्सियरिटी वालों को हम क्या कहते हैं कि भाई, यह कमी (नुकसान) पूरी नहीं होगी। हो जा दिवालिया। मेरे सामने दिवालिया हो जा सरकार के पास नहीं कि 'साहब, अब मेरा कुछ नहीं हो सकता।' तो मैं कहूँगा कि संपूर्ण रूप से इन्सिन्सियर हो जा। संपूर्ण रूप से इन्सिन्सियर होने से क्या होता है, वह जानते हो आप? वह यदि संपूर्ण रूप से इन्सिन्सियर हो जाएगा तो,

वही उसे मोक्षमार्ग में ले जाएगा क्योंकि भगवान का पूर्ण विरोधी हो गया। या तो भगवान का भक्त ही मोक्ष में जाता है, या फिर विरोधी। हाँ, विरोधी को तो मोक्ष में ले जाएँगे। यह इन्सिन्सियरिटी वाला तो भगवान का पूर्ण विरोधी कहलाता है। जितना इन्सिन्सियर, वह भगवान का विरोधी और जो पूर्णतः (सौ प्रतिशत) विरोधी हो जाएगा उसका मोक्ष!

भगवान की कही बात हमारे शास्त्रों में लिखी हुई है। मैं वह बता रहा हूँ कि अस्सी प्रतिशत हो चुका है तो अब बीस प्रतिशत भी पूरा कर दे। अब तू और भी बीस प्रतिशत इन्सिन्सियर हो जा। अरे, इस अस्सी प्रतिशत की भरपाई कब होगी! उसके बजाय बीस प्रतिशत को भी छोड़ दे न यहीं से! जो होना होगा वह होगा, लेकिन फिर कहा कि दूसरा रास्ता बताता हूँ, यों ही नहीं! अपने आप तो वह जा ही नहीं सकता। थोड़ी बहुत इन्सिन्सियरिटी हुई होगी तो जीते नहीं बनता। इसलिए ले, मैं तुझे दूसरा दिखाता हूँ, वह तुझे मोक्ष में ले जाएगा। इन्सिन्सियर रहकर भी मोक्ष में जा सकता है।

मोक्ष तो, ज्ञानीपुरुष का एक ही वाक्य यदि पकड़े तो बहुत हो गया। एक ही वाक्य पकड़े और उसका अंत तक पालन करे तो। यह तो, मैंने आपको ज्ञान दिया है इसलिए जागृति रहेगी। आपके तो हाथ में आ गया है लेकिन दूसरे बाहर के व्यक्ति यदि मेरा एक ही वाक्य पकड़ेंगे तो भी बहुत हो गया!

पहले खोखले भाग में ज्ञान भरो

प्रश्नकर्ता : निष्ठावान किस प्रकार से बन सकते हैं? अंदर सभी प्रकार की पोल है। अंदर पोल है, उसका तो खुद को पता नहीं चलता न कि यहाँ खोखला है?

दादाश्री : पहले एक बार फाउन्डेशन मज़बूत कर ले न! स्टेबिलाइज़ेशन कर ले, फिर होगा। पहले स्टेबिलाइज करना पड़ता है। पोले भाग में मिट्टी-विट्टी डालकर ऊपर रोलर चलाना चाहिए और स्टेबिलाइज करने के बाद निष्ठावान बनने के लिए फाउन्डेशन खोदना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, कितनी जगह पर तो पता ही नहीं चलता कि यहाँ पोल चल रही है?

दादाश्री : हाँ, लेकिन यह किसी बाहर वाले ने नहीं की है, ये आपकी ही की हुई है।

प्रश्नकर्ता : की मैंने ही है लेकिन मुझे पता ही नहीं चलता न!

दादाश्री : तो अब उसे ठीक कर देना। उसमें हमें यह भराव भर देना है। उस पर, दादा से रोलर माँग लेना। वे मुफ्त में रोलर दे देंगे। किराया-विराया कुछ नहीं। भराव भर दो न एक बार।

प्रश्नकर्ता : दादा, और ठीक से समझाइए न! यह समझ में नहीं आया भराव भरना क्या है?

दादाश्री : भराव भरना यानी यह जो देह है, उसमें पुराना माल भरा हुआ है, तो अब दादा का यह अच्छा माल भरना। आप वह भरोगे तो दूसरी तरफ से पुराना निकलता जाएगा। दादा का भरते रहेंगे तो वह निकलता जाएगा। एक व्यक्ति ने मुझ से कहा, 'मैं खाना न खाऊँ तो मुझे कब्ज़ हो जाता है,' उसका क्या कारण है? कि भरता नहीं है। भरेगा तभी खाली होगा न! तू भी नहीं भर रहा है इसलिए खाली नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : ठीक है, ऐसा नियम है।

दादाश्री : अगर तू भरेगा तो सब खाली हो

जाएगा, भरा हुआ माल निकल जाएगा। इसलिए भराव करने का कहता हूँ। करेगा अब?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : हाँ! तो भरना ठीक से। तू करेगा तो फिर ये सब भी भराव करेंगे।

प्रश्नकर्ता : उससे तो सभी को लाभ मिलेगा न, दादा। सभी को ज़रूरत है न, दादा।

दादाश्री : शायद अगर किसी ने भराव किया होगा तो, उसे रोलर घुमाने की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : रोलर घुमाना मतलब क्या करना है?

दादाश्री : वह तो हम फिर घुमा देंगे बाद में। रोलर आता है आठ टन का, बारह टन का। हम जानते हैं कि यहाँ पर बारह टन का रोलर घुमाना है। जब तक आप (यह) भराव नहीं करोगे, तब तक रोलर कैसे घुमाएँगे?

प्रश्नकर्ता : नहीं घुमा सकते।

दादाश्री : रोलर घुमाने जाएँगे तो रोलर गिर जाएगा!

ज्ञान भरने से अज्ञान निकल जाता है

प्रश्नकर्ता : चाहे अच्छा माल हो या खराब, सब का *निकाल* (निपटारा) ही करना है न! हमें तो शुद्धात्मा में रहना है न?

दादाश्री : हाँ, *निकाल* करना है।

प्रश्नकर्ता : फिर भराव करने की क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : वह भराव नहीं करना है, भराव तो अपने इस ज्ञान का करना है। इससे सारा अज्ञान निकल जाएगा। सारा कचरा!

प्रश्नकर्ता : निष्ठावान तो अच्छा गुण है न, दादा?

दादाश्री : नहीं। और कहीं निष्ठावान होना वह अच्छा गुण नहीं कहलाता, निष्ठावान अर्थात् सिन्सियर टू दिस ज्ञान। सिन्सियरिटी नहीं होगी तो यह होगा ही नहीं न!

आप मेरे प्रति सिन्सियर न रहो तो?

प्रश्नकर्ता : तो नहीं हो पाएगा।

दादाश्री : यदि आपकी निष्ठा में ब्रह्मचर्य न हो, तो आप ब्रह्मचर्य पालन कर ही नहीं सकते। निष्ठा में ब्रह्मचर्य होना चाहिए।

जहाँ हो रुचि, वहाँ आएगी निष्ठा

जैसे अगर कोई ब्रह्मनिष्ठ पुरुष हों, तो उनकी निष्ठा में क्या रहता है? 'ब्रह्म'! उतनी ही निष्ठा। अन्य किसी के प्रति सिन्सियर नहीं।

प्रश्नकर्ता : सिर्फ ब्रह्म की ही निष्ठा?

दादाश्री : हाँ, कृष्ण भगवान क्या कहलाते हैं? नैष्ठिक ब्रह्मचारी। नैष्ठिक ब्रह्मचारी यानी क्या कि ये कृष्ण भगवान जैसे हैं वैसे ही हैं, लेकिन उनकी निष्ठा में अब ब्रह्मचर्य के अलावा अन्य कुछ भी नहीं है। उनकी निष्ठा में ब्रह्मचर्य है इसलिए उन्हें नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहा गया है।

प्रश्नकर्ता : नैष्ठिक ब्रह्मचारी!

दादाश्री : हाँ, तभी तो जमुना जी ने मार्ग दिया था, नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे, इसीलिए। उस निष्ठा की कीमत आपको समझ में नहीं आयी?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आयी।

दादाश्री : लोग नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहते हैं लेकिन समझते नहीं हैं कि नैष्ठिक क्या है और वह क्या है? नैष्ठिक ब्रह्मचारी के बारे में सोचते

नहीं हैं। यदि अभी शक्कर पर कंट्रोल आ जाए तो लोग तुरंत सोच लेते हैं कि 'कहाँ से मिलेगी, कहाँ से ले आऊँ, क्या करूँ?' ऐसा सब वे सोच सकते हैं। यह करना आता है, वह नहीं आता। उसमें रुचि ही नहीं है न! सारी रुचि यहाँ पर भौतिक में, इसमें (अध्यात्म में) अभी उसे रसास्वाद आया ही नहीं है न! यदि इसमें रसास्वाद आएगा तो वह सभी स्वाद छोड़ देगा।

व्यवहार शुद्ध हो, उसके लिए

प्रश्नकर्ता : सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी के बारे में जो बात हुई, तो वह व्यवहार की सिन्सियरिटी व मॉरैलिटी है या निश्चय की?

दादाश्री : निश्चय में तो सिन्सियरिटी व मॉरैलिटी है ही नहीं न! सब व्यवहार का ही है। ये सभी शब्द व्यवहार के हैं। ये सभी शब्द व्यवहार शुद्ध करने के लिए हैं। निश्चय में तो एक भी शब्द नहीं पहुँचता, एक अक्षर भी नहीं पहुँचता। व्यवहार में जितना सिन्सियर और मॉरल, उतनी ही, उसे कभी भी परेशानी नहीं आती। जिसमें जितनी सिन्सियरिटी और मॉरैलिटी, वह उतनी ही जल्दी मोक्ष में जाता है। उसका मार्ग निरंतर क्लियर ही रहता है।

पचास प्रतिशत तक तो पहुँचो

तू कहीं पर इन्सिन्सियर रहा है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : ऐसा? थोड़ा बहुत या पचास प्रतिशत या पच्चीस प्रतिशत?

प्रश्नकर्ता : वह पता नहीं, अभी तक परसेन्टेज (प्रतिशत) नहीं निकाले।

दादाश्री : हाँ, लेकिन है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह कुछ तो होना ही चाहिए?

दादाश्री : थोड़ा बहुत है। नहीं? दस प्रतिशत? तब तो हम निकाल देंगे! छुटकारा। पच्चीस प्रतिशत होने तक, पचास प्रतिशत होने तक जागृति द्वारा उसे निकाल दो। फिर इक्यावन हुआ, तो उसकी बजाय..! जो व्हील है न! फ्लाई व्हील देखा है? बड़े-बड़े इन्जिनों का फ्लाई व्हील बहुत बड़ा होता है। नहीं? उसे हैन्डल मारते हैं, फ्लाई व्हील से। वैसे ही इसे यहाँ से हैन्डल मारना, तो यहाँ पर यह जो सेन्टर का निशान है, तो यह यहाँ से (नीचे से) हैन्डल मारा, यहाँ से उठाकर यहाँ तक (मध्यबिंदु तक) आए, और यहाँ से अपने आप इसे छोड़ देंगे तो वापस उतना ही घूम जाएगा। इसलिए यदि वह इक्यावन प्रतिशत, बावन प्रतिशत, इन्सिन्सियर हो जाएगा न तो उसे नहीं करना होगा फिर भी इन्सिन्सियरिटी घुस ही जाएगी। अपने आप घूमेगा। जबकि अगर पचास से कम होगा न तो पीछे (उल्टा) घूमेगा। फ्लाई व्हील नहीं देखा?

प्रश्नकर्ता : देखा है न!

दादाश्री : आपने घुमाते समय नहीं देखा होगा। नहीं? मैं तो पाँच-पाँच, दस-दस मिनट तक देखता रहता था कि यह वजन ठेठ तक, पूरा गोल-घुमाना पड़ता है? 'नहीं, यहाँ तक इसे घुमाओ। फिर तो वह अपने ही वज़न से घूमेगा।' अतः यह सब ऐसा है। यह पूरा जगत् गोल ही है। यह सब सिर्फ समझना ही है।

इसलिए अब सिन्सियरिटी व मॉरैलिटी अगर आधी होगी तो चलेगी। आधी, फिफ्टी परसेन्ट। पूरा होने पर भगवान बन जाते हैं! पूरा नहीं करोगे तो चलेगा लेकिन अगर पचास प्रतिशत भी करोगे तो बहुत हो गया!

- जय सच्चिदानंद

स्वरूप ज्ञान के बाद...

इस 'ज्ञान' के बाद आपमें अब अहंकार है ही नहीं क्योंकि अहंकार किसे कहते हैं? 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा तय करना, वह है अहंकार! और आपको 'मैं चंदूभाई हूँ' उस ज्ञान पर शंका हुई। 'मैं चंदूभाई नहीं हूँ' और 'मैं तो शुद्धात्मा हूँ,' इसलिए अब आपमें अहंकार है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : अहंकार अर्थात् 'मैं चंदूभाई हूँ' उस भाग को ही कह रहे हैं न?

दादाश्री : हाँ, वही अहंकार कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : वह अहंकार भाग तो निकल गया है लेकिन क्या अब हमारा अभिमान रह गया है?

दादाश्री : हाँ, अभिमान में हर्ज नहीं है। अभिमान निकाली चीज़ है। आपमें अहंकार रहा ही नहीं न! अभिमान में हर्ज नहीं है। मान और अभिमान, वे निकाली चीज़ हैं। फिर उससे आगे गर्व और बाकी सब सामान रहा हुआ है न! मूल अहंकार गया लेकिन अहंकार के जो परिणाम थे, वे तो रहे ही हैं न! मूल रूट कॉज़ गया लेकिन ऊपर की जो डालियाँ वगैरह बची हैं, वे सूख जाएँगी।

प्रश्नकर्ता : यानी अभिमान है, वह पुराने अहंकार का ही परिणाम है?

दादाश्री : हाँ। अभिमान, अहंकार का ही परिणाम है। वह परिणाम रह गए और 'रूट कॉज़' चला गया। अहंकार गया! और जब अहंकार के सभी परिणाम चले जाते हैं, तब केवलज्ञान होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर अहंकार का परिणाम अभिमान है, तो अभिमान जाने पर तो केवलज्ञान हो जाता है न?

दादाश्री : नहीं। परिणाम में सिर्फ अभिमान नहीं है। अहंकार के परिणाम में तो और भी बहुत कुछ है। वे सभी चले जाते हैं, तब केवलज्ञान होता है!

प्रश्नकर्ता : तो अहंकार के परिणाम कौन-कौन से हैं?

दादाश्री : बहुत! कईं तरह के परिणाम हैं।

प्रश्नकर्ता : हमारे इस अभिमान से किसी को तकलीफ नहीं हो, और संताप नहीं हो, इसके बजाय सामने वाले को सुख हो उसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : सिर्फ इतना भाव ही करना है। और कुछ नहीं करना है। 'अपने अभिमान से किसी को दुःख न हो और सुख ही हो,' ऐसा भाव करना है। फिर दुःख हो जाए तो प्रतिक्रमण करने हैं और आगे बढ़ते जाना है। तब और क्या करें फिर?! हमें क्या पूरी रात वहीं बैठे रहना है? फिर ऐसा नहीं है कि बैठे रह सकें। हमें बैठे रहना हो फिर भी बैठा पाएँ, तो क्या करना चाहिए? फिर भी, हमें उस तरह से कदम उठाने चाहिए कि लोगों को दुःख न हो।

प्रश्नकर्ता : उस हिसाब से तो पूरा संसार अहंकार का ही परिणाम है, 'मैं चंदूभाई हूँ' पूरा संसार उसी का परिणाम है न?

दादाश्री : लेकिन अब इस 'ज्ञान' के बाद आपका यह अहंकार गया। यदि वापस अहंकार रहता तो परिणाम उत्पन्न होते रहते न! इस 'ज्ञान' के बाद तो नए परिणाम उत्पन्न ही नहीं होते न! और पुराने परिणाम खत्म ही होते जाते हैं, सिर्फ पुराने ही खत्म हो जाएँगे। तब फिर हल आ गया। यह टंकी नई नहीं भरती है। किसी की टंकी पचास गेलन की होती है और किसी की पच्चीस लाख गेलन की होती है। बड़ी टंकी हो तो देर लगती है लेकिन जिसकी खाली होने लगी है, उसे क्या!

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

19-23 जनवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में पाँच दिनों की WMHT शिविर आयोजित हुई। जिसमें 4600 परिणित बहनों ने हिस्सा लिया। इस शिविर में पूज्य श्री द्वारा स्पेश्ल टॉपिक 'केमेरा फाइल नंबर वन पर' और 'असंतोष की भूख' पर सत्संग हुआ था जिससे शिविरार्थी बहनों को खुद के दोष देखने की जागृति बढ़ गई हो, ऐसा अनुभव हुआ। शिविर के दौरान पूज्य श्री द्वारा बह्मचर्य (उ) पुस्तक पर पारायण हुआ। पूज्य श्री के सत्संग के अलावा 'असंतोष की भूख' टॉपिक पर एक सेशन में एक्टिविटी की गई और आप्तपुत्री बहनों द्वारा विविध ग्रूप में सत्संग, गरबा, VCD और स्पेश्ल WMHT विडियो क्लिप वगैरह आयोजित किया गया।

25-29 जनवरी : अडालज त्रिमंदिर संकुल में पाँच दिनों की वार्षिक MMHT शिविर आयोजित हुई जिसमें 2350 परिणित महात्मा भाईयों ने हिस्सा लिया। पूज्य श्री द्वारा 'कल्पना का मान' विषय पर विशेष सत्संग हुआ और इसके अलावा बह्मचर्य (उ) पुस्तक पर पारायण हुआ। 'कल्पना का मान' टॉपिक पर नाटक, गरबा, ज्ञानवाणी, MMHT यात्रा की हाइलाइट्स वगैरह कार्यक्रम सामायिक के बाद के रात्रि सेशन में आयोजित हुए। आप्तपुत्र भाईयों द्वारा सत्संग और विविध ग्रूप सत्संग हुए। इस बार ज्ञान लिए गए वर्ष के अनुसार ग्रूप बनाऐ गए। 'कल्पना का मान' पर हुई एक्ट्विटी द्वारा महात्माओं को बहुत सीखने मिला। इस शिविर से महात्माओं को बहुत लाभ हुआ, ऐसा अनुभव हुआ।

4-6 फरवरी : मेहसाना में पूज्य श्री का कार्यक्रम पाँच साल के बाद आयोजित हुआ। पूज्य श्री का स्वागत बाइक सवारों द्वारा एस्कोर्ट करके शानदार तरीके से किया गया। 'भ्रांत पुरुषार्थ-यथार्थ पुरुषार्थ' पर पूज्य श्री द्वारा सत्संग और विविध प्रश्नों का जवाब दिया गया। स्थानीय महत्माओं के लिए सेवार्थी सत्संग, दादा दरबार और दर्शन का कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसका 150 सेवार्थियों ने लाभ लिया। ज्ञानविधि में 1150 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। फोलोअप सत्संग में भी बहुत सारे ज्ञान प्राप्ति किए हुए महात्मा ज्ञान की समझ प्राप्त करने के लिए आए थे।

10-13 फरवरी : अहमदाबाद के रिवर फ्रन्ट इवेन्ट सेन्टर में सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पूज्य श्री द्वारा 'कषाय कम करें वह धर्म' और 'एडजस्टमेन्ट से होगा संसार सुंदर' विषय पर सुंदर विवरण हुआ और मुमुक्षु महत्माओं के विविध प्रकार के प्रश्नों का समाधान भी दिया गया। एक मुस्लिम भाई ने ज़ाहिर में अपने परिवार की भूतकाल में हुए दोषों के लिए माफी माँगी, जो बहुत हृदयस्पर्शी था। पूज्य श्री जब 'दादा दर्शन' आए तब महात्मा और आप्तसिंचन के साधकों ने हार्दिक स्वागत किया। पूज्य श्री के साथ महात्मा और साधकों को मोर्निंग वॉक व इन्फोमल सत्संग का लाभ प्राप्त हुआ। ज्ञानविधि में 1200 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सत्संग स्थल पर GNC के बच्चों और सिनियर सिटीज़न महात्माओं द्वारा पूज्य श्री का स्वागत हुआ। सेवार्थी सत्संग में लगभग 550 सेवार्थियों ने पूज्य श्री के सत्संग व दर्शन का आनंद उठाया। आप्तपुत्र द्वारा फोलोअप सत्संग में लगभग 600 महात्मा आए थे, जिनमें ज़्यादातर ज्ञान लिए हुए नए महात्मा थे।

18-20 फरवरी : साबरकांठा जिले के हिंमतनगर शहर में प्रथम बार पूज्य श्री द्वारा सत्संग व ज्ञानविधि हुई। लोग ज़्यादा ज्ञान प्राप्त करें इस हेतु से स्थानीय महात्मा व सेवार्थियों ने सत्संग प्रचार और प्रसार के लिए दिल से सेवा दी। समग्र साबरकांठा और अरवल्ली जिले में दादा भगवान के आत्मविज्ञान की जानकारी देने के लिए आप्तपुत्रों द्वारा लगभग 35 सत्संग हुए थे। विविध गाँवों में लगभग 30 प्रोजेक्टर शो दिखाए गए और महात्माओं द्वारा लगभग 50 हज़ार पेम्फलैट घर-घर बाँटे गए। तीन हज़ार प्रचार बुक्स मुमुक्षुओं को बाँटी गई जिससे सत्संग दौरान सत्संग का मैदान आसपास के गाँवों से आए हुए लोगों से पूरा भर गया। ज्ञानविधि के दिन 1855 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। पूज्य श्री पूज्य जेसंग बाबा जी के शिष्य पूज्य नरसी बाबा को मिले थे। बाबा ने पूज्य श्री का परंपरागत पगड़ी पहनाकर अभिवादन किया और एक-दूसरे को गले मिले।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश

वाराणसी **दिनांक :** 1-2 **अप्रैल** **आप्तपुत्रों के संग सत्संग शिविर** **संपर्क :** 9795228541
स्थल : उत्सव वाटिका, D 45/2 लक्सा रोड, गुरुद्वारा के पास, वाराणसी.

गोरखपुर **दिनांक :** 3 **अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9169452756
स्थल : प्रधान टोला, ग्राम / पोस्ट - नटवा जंगल, थाना- श्याम देउरवा, जि - महाराजगंज.

गोरखपुर **दिनांक :** 4 **अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 7800656738
स्थल : श्री राधेश्याम निषाध EWS-29, शास्त्री नगर कोलोनी, (राजेन्द्र नगर के पास), थाना -चिलुआतल, गोरखनाथ.

कानपुर **दिनांक :** 9 **अप्रैल** **समय की घोषणा बाकी** **संपर्क :** 9452525981
स्थल : श्री कोठारी गुजरात भवन, नयागंज, कानपुर.

कानपुर **दि :** 8 **अप्रैल** **संपर्क :** 9452525981 **लखनऊ** **दि :** 10 **अप्रैल** **संपर्क :** 8090177881

बरैली **दि :** 11 **अप्रैल** **संपर्क :** 9837149162

उत्तराखंड

लकसर **दिनांक :** 12 **अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9719415074
स्थल : सुभाषचंद्र सिंह, बालावाली रोड, निकट पावर हाउस, लकसर

रूरकी **दिनांक :** 13 **अप्रैल** **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9719415074
स्थल : महाराणा प्रताप हाईस्कूल, ओवरसीज बैंक के पास, लकसर रोड, धंडेरा, रूरकी.

देहराहून **दि :** 14 **अप्रैल** **संपर्क :** 9719415074

बिहार

कटिहार **दिनांक :** 4 **अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9931825351
स्थल : मनोकामना दुर्गा मंदिर, लाल कोठी रोड, कटिहार.

पूर्णिया **दिनांक :** 6 **अप्रैल** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9934374540
स्थल : स्टेशन क्लब, दुर्गामंदिर, नवरतन हटा, पंचमुखी मंदिर के पास, पूर्णिया.

पटना **दिनांक :** 7 से 9 **अप्रैल** **आप्तपुत्रों के संग सत्संग शिविर** **संपर्क :** 7352723132
स्थल : ठाकुर प्रसाद कम्यूनिटी होल, किदवईपुरी, ईन्कम टेक्स, गोलम्बर के पास (नोर्थ).

रांची **दिनांक :** 12 **अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9386982589
स्थल : शिवगंगा, शैडिक सिल्ली, रांची.

झारखंड

हजारीबाग **दिनांक :** 11 **अप्रैल** **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 8863917555
स्थल : ओकनी, बडा शिव मंदिर के पास, हजारीबाग.

टाटानगर **दि :** 27 **अप्रैल** **संपर्क :** 9931538777

उडीसा

कटक **दि :** 15-16 **अप्रैल** **संपर्क :** 7809266474 **भुवनेश्वर** **दि :** 22-23 **अप्रैल** **संपर्क :** 8763073111

रौरकेला **दि :** 17 **अप्रैल** **संपर्क :** 7749975047 **पुरी** **दि :** 24 **अप्रैल** **संपर्क :** 7077902158

बरगढ **दि :** 18 **अप्रैल** **संपर्क :** 8658090042 **बालासोर** **दि :** 25 **अप्रैल** **संपर्क :** 9658559559

संबलपुर **दि :** 19 **अप्रैल** **संपर्क :** 9668159987 **जालेश्वर** **दि :** 26 **अप्रैल** **संपर्क :** 9658559559

बरहामपुर **दि :** 20-21 **अप्रैल** **संपर्क :** 9853333355

दादावाणी

आसाम

गुवाहाटी **दिनांक :** 2 **अप्रैल** **समय :** सुबह 10-30 से 12-30 **संपर्क :** 8486363944
स्थल : स्वस्तिक एन्क्लेव, पाथरकुची रोड, बेलतला चारआली, गुवाहाटी.

गुवाहाटी **दिनांक :** 2 **अप्रैल** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9864020603
स्थल : श्री गुजरात वेल्फेर सोसायटी भवन, इलेक्ट्रसिटी बोर्ड के पास, फतासील आमबाडी, गुवाहाटी.

नलबारी **दिनांक :** 3 **अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 8011651779
स्थल : धमधमा, वोटर सप्लाई के पास, नलबारी.

राजस्थान

उदयपुर **दिनांक :** 7 **अप्रैल** **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9414538411
स्थल : 1462, छोटी नोखा, कुम्रोका बट्टा, वोर्ड नं. 39, उदयपुर.

पाली **दिनांक :** 9 **अप्रैल** **समय :** सुबह 10 से 12 **संपर्क :** 9461251542
स्थल : मेवाडा समाज भवन, कोलेज रोड, पाली.

टोंक **दिनांक :** 14 **अप्रैल** **समय :** शाम 5 से 7-30 **संपर्क :** 9314788352
स्थल : नेहरू कोलेज, स्टेडियम के पास, टोंक.

जयपुर **दिनांक :** 16 **अप्रैल** **समय :** दोपहर 2 से 5 **संपर्क :** 8233363902
स्थल : श्री चमत्कारेश्वर महादेव मंदिर, स्पेस सिनेमा के पास, झोटवाड़ा रोड, बनीपार्क, जयपुर.

जोधपुर **दि :** 8 **अप्रैल** **संपर्क :** 8290333699
पाली **दि :** 9 **अप्रैल** **संपर्क :** 9461251542
ब्यावर **दि :** 10 **अप्रैल** **संपर्क :** 9982064075
जैतारण **दि :** 11 **अप्रैल** **संपर्क :** 9413172239
भीलवाडा **दि :** 12 **अप्रैल** **संपर्क :** 9924343899
कोटा **दि :** 13 **अप्रैल** **संपर्क :** 9829262735
अजमेर **दि :** 15 **अप्रैल** **संपर्क :** 9460611890

छत्तीसगढ

रायपुर **दि :** 28-30 **अप्रैल** **संपर्क :** 8889944333

पश्चिम बंगाल

कोलकाता **दि :** 23 **अप्रैल** **संपर्क :** 9830093230

दक्षिण भारत

चेन्नई **दि :** 15-16 **अप्रैल** **संपर्क :** 7200740000, 9380159957
कोईम्बतोर **दि :** 17 **अप्रैल** **संपर्क :** 8870952999

नेपाल

बुटवल (नेपाल) **दि :** 5-6 **अप्रैल** **संपर्क :** 9847042399

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'रिश्ते' चेनल** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) - **नया कार्यक्रम**

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus.
- **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

1. **Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. **Periodicity of Publication :** Monthly
3. **Name of Printer :** Amba Offset, **Nationality :** Indian,
   Address : Basement, Parshvanath Chamber, Near New R.B.I. Usmanpura, Ahmedabad-380014
4. **Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
   Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. **Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above.
6. **Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
   Address : same as above.

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

sd/-

Date : 15-03-2017 Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation

(Signature of Publisher)

Pujya Deepakbhai's UK - Germany Satsang Schedule (2017)

Contact no. for all centers in UK + 44-330-111-DADA (3232), email:info@uk.dadabhagwan.org

Date	From	to	Event	Venue
31-Mar-17	7-30PM	10PM	Satsang	Shree Prajapati Association, Ulverscroft Road, **Leicester**, LE4 6BY
1-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	
2-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
2-Apr-17	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
21-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, **Harrow**, HA3 5BD
22-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang in English	
22-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	
23-Apr-17	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
23-Apr-17	3PM	7-30PM	Gnanvidhi	
24-Apr-17	7-30PM	10PM	Satsang	
26-Apr-17	5PM	7-30PM	Parayan (Science Of Karma)	Sauerland Stern Hotel **Willingen, Germany** Email - info@dadabhagwan.de
27-Apr-17	10AM	12-30PM	Parayan (Science Of Karma)	
27-Apr-17	5PM	7-30PM	Parayan (Science Of Karma)	
28-Apr-17	10AM	12-30PM	Satsang	
28-Apr-17	4-30PM	7PM	Gnanvidhi	
29-Apr-17	10AM	12-30PM	Satsang	
29-Apr-17	4-30PM	7PM	Satsang	
30-Apr-17	10AM	12-30PM	Darshan	

भरुच

16 मई (मंगल), शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग** तथा **17 मई** (बुध), शाम 7 से 10-30 - **ज्ञानविधि**

18 मई (गुरु), शाम 7-30 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : साँई मंदिर ग्राउन्ड, झाडेश्वर लेक के पास, झाडेश्वर रोड, भरुच, **(गुजरात). संपर्क :** 9924348882

सुरत

19-20 मई (शुक्र-शनि), रात 8 से 11 - **सत्संग** तथा **21 मई** (रवि), शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

22 मई (सोम), रात 8 से 10-30 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : SMC, पार्टी प्लोट, ज्योतिन्द्र दवे गार्डन के नजदीक, प्राईम आर्केड के आगे, न्यु रांदेर रोड. **संपर्क :** 9574008007

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में अडालज त्रिमंदिर में आगामी सत्संग कार्यक्रम

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

5 मई (शुक्र) - शाम 4-30 से 7 - **पति-पत्नी के बीच कैसे सुमेल बनाये रखे**

6 मई (शनि) - सुबह 9 से 11-30 - **मा-बाप बच्चों का व्यवहार**

7 मई (रवि) - सुबह 9 से 11-30 - **बच्चों को कहाँ कहाँ एन्करेज करें कहाँ डिस्करेज करें**

8 मई (सोम) - सुबह 9 से 11-30 - **पारायण - पैसों का व्यवहार**

9 मई (मंगल) - सुबह 9 से 11-30 - **लक्ष्मी के कारण कीच-कीच**

9 मई (मंगल) - रात 9 बजे से - **पूज्यश्री के जन्मदिन के अवसर पर विशेष कार्यक्रम**

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है।

2) इस शिविर में 'मा-बाप बच्चों का व्यवहार', 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' तथा 'पैसों का व्यवहार' टोपिक पर पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा सत्संग होगा तथा आप्तपुत्र भाईयों तथा आप्तपुत्री बहनों द्वारा ग्रुप सत्संग, स्पेशियल PMHT सीडी, भक्ति तथा इसके अलावा शिविर के दौरान अन्य कार्यक्रम किए जाएँगे। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपके मोबाइल में एफएम सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकेंगे।)

3) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज़दिकी सेन्टर में और अगर नज़दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह 9-30 से 1 और दोपहर 3 से 6) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाएँ।

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष 2017

25-29 मई (गुरु-सोम) - **सत्संग समय की घोषणा बाकी**

27 मई (शनि) - **ज्ञानविधि तथा 29 मई** (सोम) - **पूज्यश्री के संग एक दिवसीय यात्रा**

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। **इस शिविर के लिए 15 मार्च से 15 मई 2017 तक रजिस्ट्रेशन होगा।** निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने नज़दीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है और यदि आपके नज़दीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. **079-39830400** पर (सुबह 9-30 से 1 और दोपहर 3 से 6) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते है। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

यदि आप 29 मई को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 30 मई का लें।

दिल्ली	: 9810098564	**भुवनेश्वर**	: 9668159987	**नागपुर**	: 9970059233
जलंधर	: 9814063043	**रायपुर**	: 9329644433	**जलगाँव**	: 9420942944
वाराणसी	: 9795228541	**भिलाई**	: 9827481336	**मुंबई**	: 9821996663
जयपुर	: 8290333699	**इन्दौर**	: 9039936173	**पूणे**	: 7218473468
पाली	: 9461251542	**भोपाल**	: 9425023328	**हैद्राबाद**	: 9885058771
पटना	: 7352723132	**जबलपुर**	: 9425160428	**बंगलूर**	: 9590979099
मुजफ्फरपुर	: 209956892	**औरंगाबाद**	: 8308008897	**हुबली**	: 9513216111
कोलकता	: 9830093230	**अमरावती**	: 9422915064	**चेन्नई**	: 9380159957

मार्च 2017
वर्ष-12 अंक-5
अखंड क्रमांक - 137

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

अंत में सिन्सियरिटी ही दिलवाती है परमात्मा पद

सुबह-सुबह तय कर लेना कि 'इस जगत् की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए', फिर उसके प्रति सिन्सियर रहना है। अंदर तो बहुत से लबाड़ हैं कि जो हमें सिन्सियर नहीं रहने देते लेकिन यदि निश्चय के प्रति सिन्सियर रहे तो फिर उसे कोई चीज़ बाधक नहीं रहेगी। जितना तू सिन्सियर, उतनी ही तेरी जागृति। जितनी इसमें सिन्सियरिटी उतना ही खुद का (काम) होता है और यह सिन्सियरिटी तो ठेठ मोक्ष की ओर ले जाती है। सिन्सियरिटी का फल, मॉरेलिटी आ जाती है। यदि वह सिन्सियरिटी के पथ पर चला तो वह मोरल हो जाता है। संपूर्ण मॉरल हो गया, मतलब परमात्मा प्राप्ति की तैयारी हो गई। एक बार तू सिन्सियर हो जा। जितनी चीज़ों के प्रति तू सिन्सियर है, उतना ही उन चीज़ों को जीत लिया। इसलिए सभी जगह सिन्सियर हो जाओगे तो तुम जीत जाओगे। इस जगत् को जीतना है। जगत् को जीते बगैर कोई मोक्ष में नहीं जाने देगा।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.